ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-श्रावण संवत् 2072
अगस्त 2015

अंक 121, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

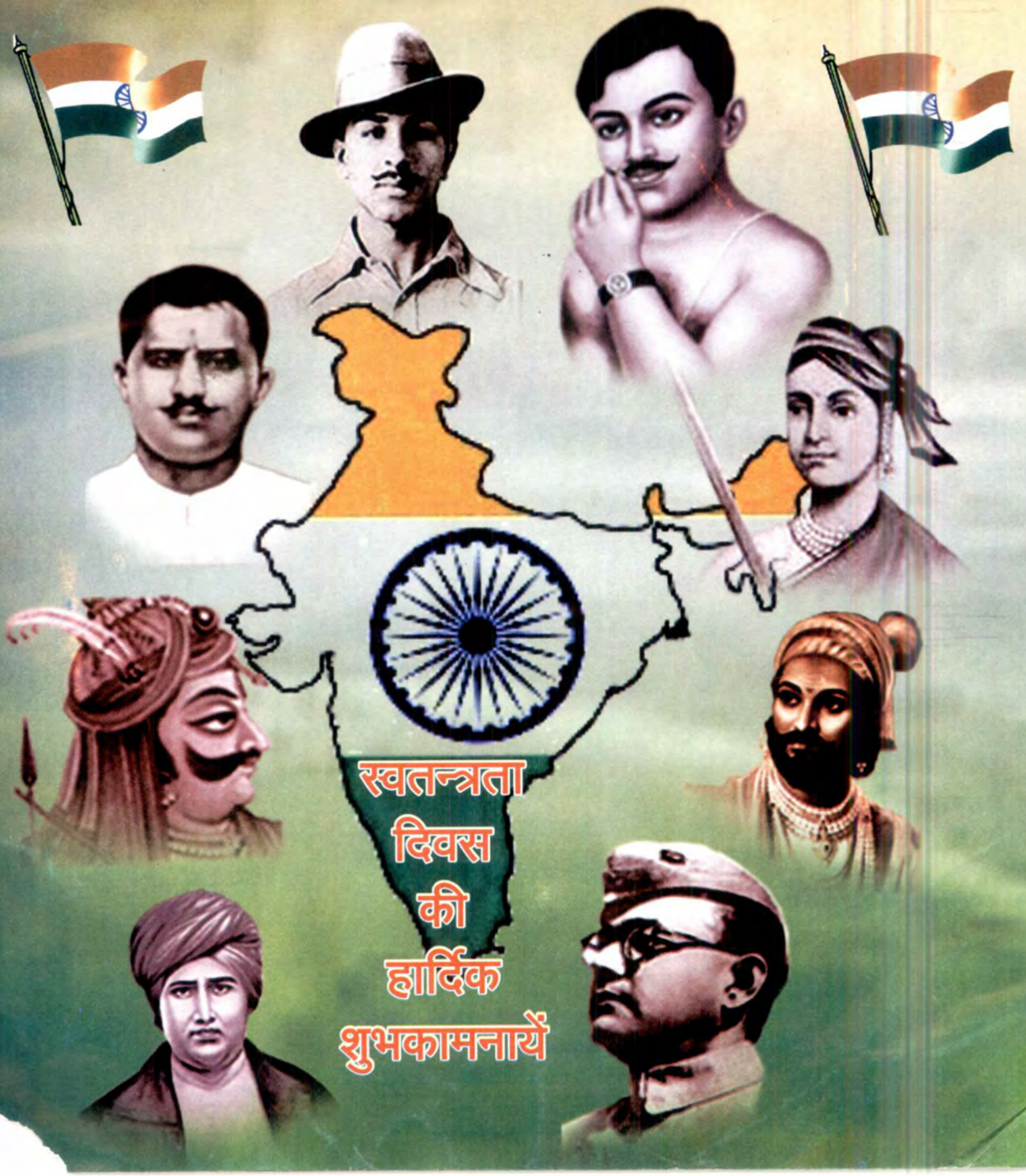

श्रावणी सन्देश

श्रावणी आर्यों का प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान पर्व है। यह पूर्णतः वैदिक पर्व है। इनका सम्बन्ध भी वेदाध्ययन एवं अध्यापन से है। गृह्यसूत्रानुसार इसी दिन चातुर्मास्य का उपाकर्म किया जाता था, जो निरन्तर वर्षा के चार मास तक चलता था। इसी आधार को लक्ष्य कर आर्यसमाज में भी वेदसप्ताह की परम्परा आरम्भ हुई। आर्यसमाज के संस्थापक प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती का दृढ़ मन्तव्य था कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् समस्त संसार को श्रेष्ठ बनाओ। श्रेष्ठ आचरण के बिना श्रेष्ठता आयेगी कहां से ? इनका आवश्यक मार्गदर्शन वेद से प्राप्त होगा। इसलिए उन्होंने दुनियां के लोगों से कहा था – वेदों की ओर लौटो, वेदों में समस्त मानवीय समस्याओं का समाधान है, क्योंकि इस धरती पर वेद ही ऐसे ज्ञान के आगार ग्रंथ है जो हमें निर्भ्रान्त बनाते हैं। वैदिक ज्ञान उदात्त एवं निर्मल होने से सांसारिक विक्षोभ एवं वैमनस्य की दुर्भावना से त्राण प्रदान कर सकते हैं। अतः वेद हमारे धर्म का मूलाधार है। श्रावणी का यह पावन पर्व वेदप्रचार की प्रेरणा प्रदान करता है, वेदानुसार जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः आर्यों आइए, हम संकल्पबद्ध होकर वेद के पावन सन्देशों को जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा उठाए।

आचार्य अंशुदेव आर्य
सभा प्रधान

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द - १९१

वर्ष - ११, अंक २ | ओ३म् | मास/सन् - अगस्त - २०१५

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : हम सुवीर्य के अधिपति हो	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : वेदोद्धार ऋषि दयानन्द की अद्भुत क्रान्ति.	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	ऋषि दयानन्द, वेदप्रचार और देश को स्वतन्त्रता प्राप्ति	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	आर्यों वेद प्रचार सप्ताह सच्चे अर्थों में मनाओ .	पं. जगदीशचंद्र वसु	१२
५.	महाभारतादि में तीर्थ	महात्मा चैतन्यमुनि	१४
६.	तान्त्रिकों का फैलता जाल	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१७
७.	प्रभु भक्ति मार्ग- सेवा एवं समर्पण से प्राप्त होगा	कन्हैयालाल आर्य	१९
८.	दान का प्रभाव	पं. नारायण शास्त्री	२२
९.	तीन पुस्तकों से क्रान्तिकारियों को मिली थी प्रेरणा.	श्री खुशहालचन्द्र आर्य	२४
१०.	"निर्भया"	श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा	२६
११.	होम्योपैथिक से कोलेस्ट्रॉल का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१६.	समाचार दर्पण		३१

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
वरि.प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) २३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

वेदामृत

हम सुवीर्य के अधिपति हों

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

इन्द्रः सुत्रामा अवोभिः, सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु, सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ ऋग्. ६.४७.१२

ऋषिः **गर्गः भारद्वाजः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(सुत्रामा)** शुभ त्राणकर्ता **(स्ववान्)** अपने अद्वितीय गुण-कर्म-स्वभाव से युक्त **(विश्ववेदाः)** विश्ववेत्ता, सर्वज्ञ **(इन्द्रः)** ऐश्वर्यशाली परमेश्वर **(अवोभिः)** रक्षाओं एवं प्रीतियों के द्वारा **(सुमृडीकः)** उत्तम सुख देने वाला **(भवतु)** होवे। (वह) **(द्वेष)** द्वेष को **(बाधतां)** दूर करे, **(अभयं)** निर्भयता को **(कृणोतु)** प्रदान करे। (हम) **(सुवीर्यस्य)** शुभ वीर्य के **(पतयः)** स्वामी **(स्याम)** हो।

● हम चाहते हैं कि 'इन्द्र' प्रभु हमें उत्तम सुख प्रदान करें। यह वही जानता है कि उत्तम सुख क्या है, क्योंकि वह सर्वज्ञ है। हम अविद्या-ग्रस्त अविवेकी जन तो बहुधा वैषयिक सुख को ही सुख मान बैठे हैं, जो कि वस्तुतः दुःख है। अनुभवी जन बताते हैं कि अध्यात्म-सुख या ब्रह्मानन्द ही सब सुखों में उत्तम है। अतः हमारा प्रभु वह सुख हमें प्रदान करें। प्रभु 'सुत्रामा' है, शुभ दाता है, विपत्तियों से उत्तम त्राण करने वाला है। संसारी जन कितने भी त्राता बनें, वे उत्तम त्राता नहीं बन पाते, क्योंकि बहुत बार वे विपत्ति से त्राण करने के स्थान पर उल्टे किसी नई विपत्ति में फंसा देने में कारण बन जाते हैं, भले ही वे सच्चे भाव से त्राण करने के लिए ही प्रवृत्त हुए हों। प्रभु, 'स्ववान्' है, अपने ही अद्वितीय सत्य-गुण-कर्म-स्वाभावों से युक्त है। हम अल्प-शक्ति मानवों से भला उस जैसे गुण-कर्म-स्वभाव कहां हो सकते हैं? इसीलिए उसके 'अवः' उसकी रक्षाएं और प्रीतियाँ भी अनुपम है। जहां सुत्रामा पद उसके विपतु-त्राण-सामर्थ्य का सूचक है, वहां 'अवः' शब्द उसके भावात्मक रक्षा-सामर्थ्य एवं प्रेम को द्योतित करता है, जिस रक्षा और प्रेम से वह सबका पोषण एवं विकास करता है। वह प्रभु हमें सच्चा सुख प्रदान करे।

पर इस सच्चे सुख के भागी हम तभी बन सकेंगे, जब हम पारस्परिक द्वेषभावों को दूर कर लें। अतः इन्द्र परमेश्वर हमारे अन्दर से द्वेषभावों को भी दूर करे। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के तथा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के रक्त का प्यासा इस द्वेषभाव के कारण ही हो जाता है। यह द्वेषभाव ही भय का मूल है। जो जिससे द्वेष करता है, वह उससे सदा आशंकित रहता है कि कहीं वह मेरे विरुद्ध कोई षड़यन्त्र न कर रहा हो, कहीं वह मुझे कोई हानि न पहुंचा दे। इसी भय से ग्रस्त होकर राष्ट्रों में परस्पर शस्त्राशस्त्रों की होड़ मचती है, विपुल धनराशि रक्षा-सेनाओं पर और युद्ध सामग्री के उत्पादन पर व्यय होती है। यदि प्रभु कृपा से हम द्वेषभाव से मुक्त हो जायें, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति तथा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति प्रेमभाव अपना ले, तो हम भय से भी मुक्त हो जायेंगे और जब परस्पर प्रेमबद्ध हो सब व्यक्ति और सब राष्ट्र एक हो जायेंगे तब प्रत्येक राष्ट्र का बल पृथक्-पृथक् बिखरा न रहकर एक राष्ट्रीय बल उत्पन्न होगा और सब राष्ट्रों का भी बल बिखरा न रहकर एक सामूहिक विश्व बल विकसित होगा। फिर युद्ध सामग्री आदि के उत्पादन की आवश्यकता न रहने से उस बल का जनहितकारी कार्यों में उपयोग हो सकेगा। हे इन्द्र प्रभु! तुम हमें द्वेषमुक्त और निर्भय कर दो, जिससे हम 'सुवीर्य' के अधिपति बन सकें।

संस्कृतार्थ :- १. स्ववान् स्वकीयसामर्थ्ययुक्तः (द भा, ऋग्. ६.४७.१८) २. अव रक्षणगतिकान्तिप्रीत्यादिषु। ३. सु मृड सुखने, कीकच् (ईक) प्रत्यय।

सम्पादकीय

वेदोद्धार ऋषि दयानन्द की अद्‌भुत क्रान्ति

वेदाध्ययन का प्राचीन पर्व श्रावणी उपाकर्म आगामी २९ अगस्त को बड़े समारोह के साथ आर्यजगत मनाने की तैयारी कर रहा है, इसी दिन से आर्यसमाज में वेदप्रचार सप्ताह का शुभारम्भ किया जाता है। स्वामी दयानन्द ने भयंकर विपरीत परिस्थिति में यह बात कही थी कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना एवं सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, क्योंकि ऐसा कहना बड़ी हिम्मत की बात थी, आखिर ऐसा क्यों ?

मध्यकाल का इतिहास इस बात का गवाह है कि मध्यकालीन जितने भी प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं, चांहे व मध्वाचार्य हों या वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य हों या रामानुजाचार्य अथवा शंकराचार्य ही क्यों न हो सभी नें वेदों को परं प्रमाण स्वीकारा है किन्तु अपने सिद्धान्तों के समर्थन के लिए उन्होंने अधिकतर उपनिषद् वेदान्तसूत्र और भगवत्‌गीता का ही आश्रय लिया है वेद की मूल संहिताओं का नहीं। श्रुति के नाम से भी इन आचार्यों नें प्रायः उपनिषद् के वचनों को ही यत्र-तत्र सर्वत्र उद्धृत किये हैं उनके ग्रंथों के पाठकों से यह बात छिपी नहीं है। लिखने का अभिप्राय यही है कि इन आचार्यों ने जो अनादिकाल से चली आ रही वेद परम्परा थी, उसे सर्वथा तिलाञ्जलि दे दी और प्रस्थानत्रयी का पल्ला पकड़ लिया। यही वजह रहा वेद के उस गरिमामय ज्ञानोपलब्धि से वे वञ्चित रह गये जिससे वेदों के सम्बन्ध में उनकी अशुद्ध एवं संकुचित धारणा बन गयी। इन सबसे अलग महर्षि दयानन्द ने जिस मार्ग को अङ्गीकार किया यह वही आर्ष सरणी थी जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि तक सभी ने एक स्वर से स्वीकारी थी, और यही सबसे बड़ी हिम्मत की बात थी, जिसे दयानन्द ने तत्कालीन प्रचलित प्रस्थानत्रयी को छोड़ प्राचीन वेदत्रयी को स्वीकार कर एक अद्‌भुत क्रान्ति का सूत्रपात किया।

ऋषि दयानन्द का उदय उस कालखण्ड में हुआ जब सर्वत्र देश विदेश में वेद विषयक अज्ञान फैला हुआ था। शारीरिक दृष्टि से समानता होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसी विलक्षणता होती है जिसके कारण वह व्यक्ति अलग से पहचाना जाता है किसी भी मनुष्य में पाये जाने वाले लक्षणों में से सबमें पाये जाने वाले सामान्य लक्षणों को निकाल देने पर जो बचा रहता है वही उसका वैशिष्ट्य है। उसी से उसे पहचाना जाता है। वह उसका व्यक्तित्व माना जाता है।

दयानन्द की पहचान क्या है ? निश्चय ही उनका वैशिष्ट्य उस गुण के कारण माना जाएगा जो अन्य महापुरुषों में न पाया जाता हो। इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया किन्तु यह कार्य तो अपने-अपने स्तर पर कबीर, नानक, राममोहन राय, महादेव गोविन्द रानाडे, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि अनेक महापुरुषों ने किया था। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिएं स्वामी जी के प्रायः समकालीन भारतेन्दु हरिशचन्द्र श्रद्धाराय फिल्लोरी राजा लक्ष्मण सिंह, नवीनचन्द्र राय आदि ने भी आन्दोलन किया। देश की स्वाधीनता के लिए न जाने कितने लोगों ने अपने जीवन खपा दिये। गीता उपनिषद् रामायण महाभारत दर्शनों आदि के भी बड़े-बड़े विद्वान् तथा व्याकरणादि के आचार्य हुए जिन्होंने इन महान ग्रन्थों के प्रचार द्वारा लोगों के जीवन को प्रभावित किया। इस लिए इनके कारण भी दयानन्द की पहचान नहीं बन पाती। हाँ एक बात अवश्य ऐसी है जिसे पहले हजारों वर्षों से न पहले कभी किसी ने कहा और न आज कोई महापुरुष कहता है और वह है - **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परंधर्म है।** वेद के प्रति यह दृष्टि ही महर्षि दयानन्द का वैशिष्ट्य है। यदि उनके जीवन में से इसे निकाल दिया जाय तो दयानन्द अन्य समाज सुधारकों में से एक हैं। इसलिए दयानन्द की पहचान उन्हीं बातों के कारण है जो उन्होंने वेदों के सम्बन्ध में कही या की। उन्हीं के कारण वे ऋषि कहाते हैं।

जब भारत के बड़े-बड़े विद्वान भी वेदों के वास्तविक अर्थों से अनिभज्ञ होकर उनकी क्रियात्मक उपेक्षा कर रहे थे, जब वेदों को हजारों देवी देवताओं की पूजा का प्रतिपादक तथा जाति भेद अश्पृश्यता बालविवाह और यज्ञों में पशुहिंसा आदि का समर्थक मानते थे, जब पवित्र वेदों का स्थान अधिकतर रामायण महाभारत भगवत्गीता पुराणादि ने लिया था, महर्षि दयानन्द ने फिर "**वेदों की ओर लौटो**" का सिंहनाद करके जनता में भी अद्‌भुत जागृति पैदाकर दी - पवित्र वेद मंदिर के द्वार को **यथे मां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः** (यजु.)के वैदिक आदेशानुसार सब नरनारियों के लिए खोलने की जो उदारता दिखायी, वेदों की सार्वभौमिक सार्वकालिक युक्तियुक्त और वैज्ञानिक शिक्षाओं को जिस बेहतरीन ढंग से दुनियाँ के आगे रखकर उस वेदभास्कर के ज्ञानरश्मियों से समस्त अज्ञानान्धकार को छिन्न-भिन्न करने का जो अत्यन्त अभिनन्दनीय काम किया उसे शब्दों से वर्णन करना नितान्त कठिन है।

वेद प्रचार विषयक ऋषि की देन महान और अनुपम है - दयानन्द ने वह काम कर दिखाया जिसकी परिकल्पना भी उस काल खण्ड में कोई नहीं कर सकता था, थोड़ा कर्मकाण्ड एवं उससे ज्यादा लाल कपड़े में लपेट पूजा की वस्तु के अतिरिक्त वेद का कोई महत्व नहीं रह गया था, दयानन्द पहले क्रान्तिकारी इस क्षेत्र के हुए जिन्होंने लाल कपड़े की लपेट से बाहर निकालकर वेद को आचारण की वस्तु ठहराया। ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की ऐ दुनियां के लोगों यदि वास्तविक सुखशान्ति और समृद्धि पाना चाहते हो तो वेद की शरण में आओ-वरना कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। "**वेदवादं परित्यज्य न कश्चित् सुखमेधते**" इस आर्षवचन को ऋषि ने ध्येय माना। यह सचमुच उस समय क्रान्तिकारी पहल थी।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की वेद विषयक विशिष्ट धारणाओं पर चिंतन करें तो हम पायेंगे-

१. **महर्षि** ने अत्यन्त प्रबल तर्कों और प्रमाणों से मानवसृष्टि के आरम्भ में ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता को सिद्ध करते हुए अनेक कसौटियों से प्रमाणित किया कि ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है जिसकी शिक्षाएँ सर्वथा पवित्र सार्वभौमिकयुक्ति एवं तत्वज्ञानसम्मत है ।

२. **वेद** ईश्वरीय ज्ञान होने के साथ ही सृष्टि के आरम्भ में प्रकाशित होने से नित्य हैं । अतः उनमें अनित्य इतिहास नहीं हो सकता वेदों में पाये जाने वाले वशिष्ठ जमदग्नि विश्वामित्र अत्रि इत्यादि शब्द व्यक्ति वाचक न होकर गुण विशिष्ट या पदार्थ सूचक है, जैसा कि ब्राह्मण ग्रन्थों से भी स्पष्ट होता है **प्राणोवैवशिष्ठ, प्रजापतिर्वे जमदग्निः** (शतपथ) ।

३. **वेदों** के सारे शब्द रूढ़ नहीं है यौगिक या योगरुढ़ हैं । "**सर्वाणि नामान्यख्यातजानिइति नैरुक्तसमय**" निरुक्त के अनुसार लौकिक संस्कृत की तरह रूढ़ मानकर वेद की व्याख्या करना ठीक नहीं है । यौगिक होने के कारण अग्निइन्द्र मित्र इत्यादि शब्द आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक दृष्टि से विभिन्नार्थक है ।

४. **वेद** विशुद्ध रुप से एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करने वाले हैं । अग्नि, मित्र, इन्द्र, वरुण आदि शब्द जैसे कि – "**इन्द्र मित्रं वरुणमिग्नमाहुः एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति**॥ (ऋ. १,१६४,४६) इत्यादि मन्त्रों को उद्धृत करते हुए बताया गया है, प्रधानतया परमेश्वरवाचक हैं । आधिभौतिक क्षेत्र में ज्ञानी ब्राह्मण, ऐश्वर्य सम्पन्न राजा, जीव, पुरोहित, अज्ञानान्धकारनिवारक श्रेष्ठपुरुष इत्यादि के वाचक भी हैं । ८ वसु. ११ रुद्र १२ आदित्य (मास), इन्द्र (विद्युत) और प्रजापति (यज्ञ) ये ३३ तत्व प्रकाशदायक तथा लाभकारी होने के कारण वेदादिशास्त्रों में देव कहे गये हैं, किन्तु उपास्य परमदेव एक परमेश्वर ही है।

५. **यज्ञ** शब्द जिस यज् धातु से बनता है, उसके देवपूजा, सङ्गतिकरण और दान ये तीन अर्थ हैं जो अपने से बड़ों बराबर स्थिति वालों और हीनों (छोटों) के प्रति कर्त्तव्य के सूचक हैं । अतः अपने तथा जगत् के कल्याण के लिये किया गया प्रत्येक शुभकार्य यज्ञ कहाता है । यज्ञों में पशुहिंसा सर्वथा वेदविरुद्ध है । यज्ञ के लिये वेदों में सैकड़ों स्थानों पर 'अध्वर' शब्द का प्रयोग किया गया है । जिसका अर्थ ही 'अध्वर' इत यज्ञनाम ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः (निरुक्त१,८) इत्यादि यास्काचार्यकृत निरुक्तानुसार हिंसारहित शुभकर्म हैं ।

६. **वेदों** में अध्यात्मविद्या के अतिरिक्त भौतिक विद्याओं का भी बीजरुप से उपदेश है ।

कुल मिलाकर वेद का सच्चा स्वरुप महर्षि दयानन्द ने दुनियाँ के सामने रखा, उसके वैशिष्ट्य एवं महत्व को प्रतिपादित कर हमें सतपथ का दिग्दर्शन कराया, इसके अनुसार आचरण द्वारा हम मानव जीवन को कृत कृत्य कर सकते हैं । आइए, वेद मार्ग पर चलें उसी में सबका कल्याण है और श्रावणी उपाकर्म की सार्थकता है ।

श्रुतीनांसत्योऽर्थःप्रभुवरकृतीनामनुगुणः, जगत्कल्याणार्थं परमफलदोयुक्त्युपचितः ।
अहोयेन प्रोक्तो निगमविदुषा संयमजुषा,दयानन्दोवन्द्यः किमिव सदलङ्कार इह नो ॥

– **आचार्य कर्मवीर**

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर

'महर्षि दयानन्द, वेदप्रचार और देश को स्वतन्त्रता की प्राप्ति'

- मनमोहन कुमार आर्य

15 अगस्त का दिन देश का स्वतन्त्रता दिवस है। सन् 1947 में इसी दिन भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति व स्वतन्त्रता मिली थी। यद्यपि यह स्वतन्त्रता है परन्तु हमें यह भी याद रखना चाहिये कि इस दिन से एक दिन पहले 14 अगस्त, 1947 को भारत का 1/3 से अधिक भाग हमसे अलग कर पाकिस्तान बना दिया गया था जिसका कारण हिन्दू व मुस्लिम दो अलग–अलग कौमों का होना था। 15 अगस्त, 1947 को जो स्वतन्त्रता हमें व हमारे वर्तमान देश भारत को मिली उसमें महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का क्या योगदान था, इसकी संक्षिप्त चर्चा हम इस लेख में कर रहे हैं। इसके लिए हमें पराधीनता की पृष्ठ भूमि में जाना होगा। महर्षि दयानन्द का कहना व मानना है और यह प्रमाणिक भी है कि सृश्टि के आरम्भ काल से महाभारत काल तक के लगभग 1 अरब 96 करोड 08 लाख 48 हजार वर्षों तक आर्यों का समस्त भूमण्डल पर एकमात्र चकवर्त्ती राज्य रहा है। इसका अर्थ है कि आर्यावर्त्त के अतिरिक्त अन्य देशों में वहां उत्पन्न हुए मनुष्यों में जो राजा होते थे वह सभी भारत वा आर्यावर्त्त के अधीन होते थे और नियमानुसार भारत को कर आदि देते थे। इस कर के बदले में भारत उनकी शिक्षा व अन्य आवश्यकताओं में अपना योगदान देता था जैसा कि किसी परिवार में बड़ा धार्मिक वैदिक प्रवृत्ति का भाई अपने छोटे भाईयों व उनके परिवार के प्रति करता है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र और महाभारत में युधिष्ठिर जी के उदाहरण हमारे सामने हैं। यह बताना भी प्रासंगिक है कि चकवर्तीराज्य का अर्थ किसी देश व राजा को गुलाम बनाना नहीं है अपितु इसका अर्थ केवल वहां वैदिक मान्यताओं के अनुसार धर्म का राज्य जिसमें सत्य, न्याय, निष्पक्षता, सबकी समृद्धि, सुख व कल्याण हो, ऐसी व्यवस्था के लिए सहयोग

किया जाता था। इसका यह भी एक कारण था कि वहां कोई राजा निरंकुश होकर अपनी प्रजा व पड़ोसी राज्यों से शत्रुता और युद्ध आदि न करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह चकवर्तीराज्य होता था। सभी देशों में वहां के मूल निवासी ही राज्य करते थे। भारत के चकवर्ती सम्राट की ओर से राज्य संचालन में उनको सहयोग दिया जाता था और उनसे कर लिया जाता था। निर्धन व निर्बल देशों की सहायता भी उस कर से प्राप्त राशि से अवश्य की जाती होगी, ऐसा अनुमान वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है।

महाभारत काल तक आर्यों का राज्य निष्कंटक चलता रहा। महाभारत काल में राज–परिवार में परस्पर मतभेद हुए जिसमें एक पक्ष धर्म पर था तो दूसरा अधर्म पर, अधर्म के पक्ष ने स्वार्थ, शक्ति व छल से काम लिया जिसका परिणाम उस समय का महायुद्ध हुआ जिसमें लाखों लोग मारे गये और जिसके परिणाम से जो अव्यवस्था उत्पन्न हुई वह नियंत्रित होने के स्थान पर बढ़ती गई। यह हमारा सौभाग्य है कि महायुद्ध का प्रमाणिक दस्तावेज 'महाभारत ग्रन्थ' हमारे पास विद्यमान है। इस महायुद्ध के परिणामस्वरूप वैदिक ज्ञान का लोप हो गया और समाज में अज्ञान उत्पन्न हुआ व उस अज्ञान से अन्धविश्वास, कुरीतियां आदि पतनकारी परिस्थितियां उत्पन्न हो गईं। ऐसे समय में यज्ञ में पशुओं की हिंसा होने लगी तथा जन्मना जाति व्यवस्था आरम्भ हुई। ब्राह्मणों को वैदिक काल में सबसे अधिक सम्मान व अधिकार प्राप्त थे जिसका आधार उनके गुण, कर्म व स्वभाव होते थे। अब गुण–कर्म–स्वभाव पीछे हो गये और जन्म के आधार पर अज्ञानी जन्मना ब्राह्मणवर्गीय लोग उन ज्ञानी व निपक्ष ब्राह्मणों वाले अधिकारों का दुरूपयोग करने लगे जिससे क्षत्रिय, वैष्यों पर अन्याय व शोषण होने लगा और शूद्रों के प्रति तीनों ही वर्णों का पक्षपात, शोषण व अन्याय होने लगा। मध्यकाल में बौद्ध, जैन व अद्वैत मत अस्तित्व में आये परन्तु विशेष सुधार नहीं हुआ। समाज में मिथ्या विष्वास मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिश,

मृतक श्राद्ध, छुआछूत, ऊंच–नीच आदि प्रचलित हो गये। सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो गई जिसका परिणाम कालान्तर में पराधीनता के रूप में हुआ। पहले हम यवनों वा मुस्लिमों के गुलाम हुए और बाद में अंग्रेजों के। यह भी तथ्य है कि भारत पूरी तरह से गुलाम कभी नहीं हुआ, कुछ शक्तिशाली राजा व रियासतें गुलामी से बाहर रहीं और विरोधियों व शत्रुओं का मुकाबला करती रहीं और अपनी स्वतन्त्रता और स्वाभिमान को अक्षुण रखा। ऐसा होते–होते उन्नीसवीं सदी का पूर्वाद्ध आ गया।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत दासता के पंख में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजों की सत्ता थी तथा देशवासियों पर अमानवीय अत्याचार होते थे। जो लोग पढ़ लिखकर अंग्रेजों की जी–हजूरी करते थे, वही समाज में सुखपूर्वक आत्मसम्मान खो कर जीवन व्यतीत करते थे। किसानों पर लगान अत्यधिक था। इसी प्रकार से देश भर में दरिद्रता का साम्राज्य था। देश में ऐसा कोई देशी राजा व पौराणिक धर्म के ठेकेदार नहीं थे जो देशवासियों का मार्गदर्शन करते और उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वाभिमान की रक्षा, सद्धर्म की शिक्षा व पालन तथा स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाते। ऐसा लगता है कि हमारे सभी लोग मानसिक रूप से परतन्त्रता को पूरी तरह से स्वीकार किये हुए थे। उनके रक्त व मन में स्वतन्त्रता व स्वाभिमान की भावना नहीं थी। ऐसे समय में 12 फरवरी, 1825 को गुजरात प्रान्त के राजकोट जनपद के टंकारा कस्बे वा ग्राम में एक औदीच्य ब्राह्मण श्री करशनजी तिवारी के यहां एक बालक का जन्म होता है जिसका नाम मूलशंकर रखा जाता है और उन्हें कुल परम्परा के अनुसार शैव मत में दीक्षित करने के लिए बचपन से ही संस्कार डाले जाते हैं। मूलशंकर की लगभग 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि आती है। पिता के कहने से वह शिवरात्रि का व्रत–उपवास करते हैं। रात्रि जागरण करते हुए मन्दिर में चूहों की घटना घटती है जो बालक मूलशंकर को सच्चे शिव की खोज की प्रेरणा देती है। कालान्तर में उनकी बहिन और चाचा की मृत्यु होने पर उन्हें मृत्यु से बचने के उपाय जानने की जिज्ञासा होती है। कोई समाधान नहीं मिलता। वैराग्य के अंकुर उदित होने के कारण माता–पिता उन्हें विवाह बन्धन में बांधने का निर्णय करते हैं। जब विवाह से बचने का मार्ग नहीं मिला और विवाह में कुछ ही दिन शेष थे तो युवक मूलशंकर गृहत्याग कर देते हैं। कुछ समय बाद वह शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी बन जाते हैं और कालान्तर में संन्यास लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती नाम धारण करते हैं। इस बीच स्वामीजी के आध्यात्मिक एवं सांसारिक सत्य रहस्यों की खोज के प्रयास जारी रहते हैं। वह देश भर में भ्रमण कर साधु संन्यासियों से सच्चे शिव व मृत्यु से बचने के उपाय पूछते रहते हैं। वह योग में प्रवीण हो जाते हैं, विविध प्रकार का आध्यात्मिक ज्ञान भी प्राप्त कर लेते हैं परन्तु उनके आध्यात्मिक सिद्धान्त व मान्यतायें निश्चित नहीं हो पाती। इसी बीच सन् 1857 का भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का समय आता है। वह इस क्रान्ति में अपनी भूमिका के बारे में मौन रहे, किसी को कुछ नहीं बताया परन्तु उनके साहित्य में प्रस्तुत विचारों व उनकी भावी कार्य शैली से स्पश्ट अनुमान होता है कि वह इस आन्दोलन में खामोश, चुप या मौन नहीं रह सकते थे। उन्होंने किस प्रकार से स्वतन्त्रता आन्दोलन में क्या भूमिका निभाई, अंग्रेजों का राज्य होने के कारण, उनको मौन रहना पड़ा। यदि वह आजादी के बाद तक जीवित रहते तो सभी तथ्य सामने आ जाते। समाज का एक ज्ञानी युवा संन्यासी परतन्त्रता के विरूद्ध संघर्श में मौन व निष्क्रिय नहीं हो सकता, ऐसा हमारा अनुमान व आंकलन है।

1857 की क्रान्ति व उसके बाद अंग्रेजों का उसे कुचलने का अभियान सन् 1860 में कुछ शिथिल होता है। इस अवसर पर 35 वर्षीय स्वामी दयानन्द कहीं से प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से विद्यार्जन के लिए मथुरा पहुंचते हैं और उनके अन्तेवासी शिष्य बनकर लगभग 3 वर्ष तक अध्ययन कर वेद–विद्या निशणात् बनते हैं। गुरू की आज्ञा, प्रेरणा तथा स्वयं भी इसी कार्य को उचित मानते हुए वह वेदोद्धार, सर्वांगीण सामाजिक क्रान्ति, अज्ञान –अन्धविष्वास–कुरीतियों का समूलोच्छेद करने का निर्णय करते हैं। वेद प्रचार क्या है? वेद प्रचार सत्य ज्ञान जो तृण से लेकर ईश्वर तक पदार्थों का है, उसका प्रचार–प्रसार करते हैं, और यही मानव कर्तव्य व धर्म भी है। वेद प्रचार को लोग धर्म प्रचार तक सीमित मानते हैं, यह उचित नहीं है। स्वामीजी ने एक क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखा है। उसमें वह ईश्वर के सच्चे स्वरूप व उसकी उपासना के निर्धारण व प्रचार के साथ सामाजिक उत्थान व सुधार को

अधिक महत्व देते हैं। शिक्षा सब सुधारों का सुधार है, अतः इस पर भी व आरम्भिक समुल्लासों में विस्तार से प्रकाश डालते हैं। वेदों को वह मानव जाति की सबसे महत्वपूर्ण सम्पत्ति व निधि मानते हैं, इसलिये इसके अध्ययन–अध्यापन, रक्षा व प्रचार पर विशेष बल देते हैं। वैदिक ज्ञान व शिक्षा ही वह साधन है जिससे बुद्धि का पूर्ण विकास होता है। जिसकी बुद्धि का पूर्ण विकास होगा वह न तो दास बन सकता है, बना रह सकता है और न किसी को दास बना सकता है। अतः महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार आदि सभी कार्य देष में ज्ञान व विज्ञान का विकास व उन्नति कर अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, बाल विवाह, फलित ज्योतिश, मृतक श्राद्ध, सामाजिक असमानता–विषमता सहित परतन्त्रता को दूर करने वाले व स्वतन्त्रता को उत्पन्न करने वाले कार्य थे। महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्यसमाजों में प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक अधिवेशन व सत्संग होते थे जहां सन्ध्या–यज्ञ सहित भजन व धार्मिक प्रवचनों के साथ–साथ देश व समाज के सुधार पर विचार किया जाता था। समाज सुधार में सबसे बड़ी बाधा तो अज्ञान, धार्मिक अन्धविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियां ही थी तथा इसके साथ परतन्त्रता भी एक कारण था। परतन्त्रता के हानिकारक परिणामों को भारत में यदि सबसे पहले किसी ने अनुभव किया तो वह महर्शि दयानन्द थे। स्वतन्त्रता के लाभ व परिणामों को अनुभव कर ही उन्होंने 1857 की कान्ति के बाद इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया की घोशणा का शब्दषः खण्ड किया था। इस घोषणा का खण्डन व प्रति–उत्तर महर्षि दयानन्द ने मौखिक नहीं अपितु लिखित रूप में दिया। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा है कि "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा, मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता–माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न–2 भाशा, पृथक पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इस के छूटे, परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।" इन पंक्तियों में महर्शि दयानन्द स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि उत्तम राज्य की संज्ञा देने के साथ विदेशियों का कितना ही अच्छा राज्य हो, उसे वह पूर्ण सुखदायक होना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं करते। हम समझते हैं कि महर्षि दयानन्द जी के यह वाक्य स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव थे। इसका कारण यह है कि महर्षि दयानन्द से पूर्व किसी अन्य मनुश्य या महापुरूष ने देश की आजादी के लिए इस प्रकार के स्वतन्त्रतापरक उच्च भावों, वाक्यों व शब्दों को कहीं नहीं लिखा। दसवें सम्मुल्लास में एक स्थान पर महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते (और परदेश में नहीं करते) और परदेशी स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता। इस पंक्ति में महर्षि दयानन्द स्वदेश में परदेशी लोगों के राज्य को देशवासियों के दारिद्रय व सभी दुखों का कारण बता रहे हैं। यह एक प्रकार से स्वामी दयानंद की अंग्रेजों को देष छोड़ने व अपने देश वापिस जाने की चुनौती वा चेतावनी है। इसी प्रकार से उन्होंनें आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में भी लिखा है। यही विचार, भावना व वाक्य अनेक वर्षों बाद आजादी के आन्दोलन का आधार बने।

आजादी का आन्दोलन दो धाराओं में चला जिसमें एक गरम धारा थी व दूसरी को नरम या अंहिसा की धारा कह सकते हैं। कान्ति की धारा के प्रणेता श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा थे तथा शान्ति धारा के प्रणेता महादेव गोविन्द रानाडे थे। यह दोनों व्यक्ति महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। यदि यह कहें कि इन दोनों ने देशभक्ति एवं स्वतन्त्रता का पाठ स्वामी दयानन्द जी से ही पढ़ा था तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। पं. श्यामजी कृश्ण वर्म्मा के शिष्यों में वीरसावरकर जी जैसे अद्वितीय देशभक्त व कान्तिकारी हुए जिन पर पूरे देश को नाज, गौरव व अभिमान है। इन्हीं से प्रेरणा पाकर अन्य कान्तिकारी संगठन अस्तित्व में आये। इसी प्रकार से महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य गोपालकृष्ण गोखले थे जिनके शिष्य महात्मा गांधी जी हुए। इस प्रकार से आजादी की दोनों धाराओं के प्रणेता स्वामी दयानन्द जी ही निष्चित होते हैं। इस कारण आजादी मिलने का सर्वाधिक श्रेय यदि किसी को है तो वह आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि कांग्रेस की स्थापना आर्य समाज की स्थापना के 10 वर्ष बाद सन् 1885 में हुई। उस समय तक देशभक्ति व देश की आजादी की गुपचुप चर्चायें आर्यसमाजों में व इसके अनुयायियों द्वारा एक दूसरे से मिलने पर हुआ करती थी। कांग्रेस की स्थापना करने वालों में श्री ए.ओ. हयूम आदि लोग अंग्रेजों के विरोधी नहीं अपितु एक प्रकार से समर्थक व सहयोगी भी थे। वह अंग्रेजों से प्रार्थना कर कुछ सुधार करना चाहते थे। आजादी उनमें से किसी का भी उद्देश्य

व स्वप्न नहीं था। कांग्रेस ने भी पूर्ण स्वराज्य की मांग बहुत वर्षों बाद की। यह उल्लेखनीय है कि जब यह दोनों आन्दोलन चले तो अन्य कोई नेतृत्व न मिलने के कारण आर्यसमाज के लोगों ने इन दोनों ही नरम और गरम दलों का चुनाव किया। यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वालों में लगभग 80 प्रतिशत लोग आर्यसमाज के विचारों को मानने वाले व उससे प्रभावित थे।

देश में आजादी व देश के संचालन के विषय में यदि कहीं कोई साहित्य व लिखित विचार मिलते हैं तो वह वेदों व वैदिक साहित्य में ही प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त वैदिक धर्म से इतर किसी भी मत की पुस्तक में इनका संकेत भी नहीं मिलता। वेदों के आधार पर आर्यसमाज के विद्वान पं. प्रियव्रत वेदवास्पति ने वेदों में राजनीति सम्बन्धी ज्ञान–विज्ञान पर तीन खण्डों में ग्रन्थ लिखा है। वेद किसी देश में राज्य सत्ता का संचालन स्वदेशीय राजाओं द्वारा ही किये जाने के पक्षधर हैं। अतः वेदों के यह विचार भी विदेशी दासता से मुक्ति व स्वदेषी शासन व्यवस्था की नियुक्ति के पक्षधर हैं। मनुस्मृति भी राजा के गुणों एवं राजव्यवस्था सहित युद्ध नीति पर विस्तार से प्रकाश डालती है। इसके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश शुक्रनीति, महाभारत एवं रामायण से भी शासन व्यवस्था पर सर्वांगीण प्रकाश पड़ता है। डा. नवदीप कुमार लिखित खोजपूर्ण कृति "क्रांतिसूर्य महर्षि दयानन्द व उनके विलक्षण सहयोगी" भी महर्षि दयानन्द के स्वतन्त्रता आंदोलन मुें योगदान को समझने में सहायक है। यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि वेदों या वैदिक साहित्य में अपनी शक्ति के बल पर किसी देश को गुलाम बनाने व वहां के धन वैभव को लूटने का कहीं कोई संकेत नहीं मिलता। इसलिए वेद ही सर्वोत्तम धर्म एवं मानव आचरण शास्त्र सिद्ध होता है।

महर्शि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास राजधर्म विषय को समर्पित किया है। इसके अन्तर्गत उन्होंने राजधर्म, राज्य संचालन हेतु तीन–सभाओं राजार्य सभा, विद्यार्य सभा तथा धर्मार्य सभा, राजलक्षण, दण्ड व्यवस्था, राज–कर्तव्य, अश्टादशव्यसननिशेध, मन्त्री, दूतादि राज पुरूषों के लक्षण, मन्त्रियों के कार्य व कर्तव्य तथा दुर्ग निर्माण, युद्ध के प्रकार, राज्यरक्षा विधि, ग्राम के अधिकारियों का वर्णन, कर ग्रहण करने के प्रकार आदि अनेक विशयों का विस्तार से वर्णन किया है जो किसी स्वतन्त्र देष में ही होता है। इससे यह भी भाषित होता है कि उन्हें कालान्तर में देश के स्वतन्त्र होने की आशा थी और उसी निमित्त उन्होंने यह छठा समुल्लास लिखा था, अन्यथा इसका क्या उपयोग था ? देश के आजाद होने पर हमारे देश के नेताओं ने इन उपादानों का लाभ न उठा कर विदेशी संविधानों आदि की नकल ही की है और प्रायः अंग्रेजी राज्य के कानूनों आदि व्यवस्था को यथावत स्वीकार कर लिया। वैदिक शासन व राज्य व्यवस्था से परिचित कराना भी महर्षि दयानन्द की एक बहुत बड़ी देन है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के छठे समुल्लास में वेद और मनुस्मृति आदि के उद्धरण दिये हैं। इसमें ऋग्वेद के 2, अथर्ववेद के 3, यजुर्वेद का 1, शतपथ ब्राह्मण का 1 तथा मनुस्मृति के 190 श्लोकों को उद्धृत किया है। अतः राजधर्म व देश की व्यवस्था के संचालन में मनुस्मृति एक उपयोगी ग्रन्थ रहा है और आज भी प्रासंगिक है जिसका सत्यार्थ प्रकाश में विस्तार से वर्णन कर महर्षि दयानन्द ने देश व विश्व का उपकार किया है।

महर्शि दयानन्द ने देश को सबसे पहले स्वतन्त्रता व स्वराज्य का मन्त्र दिया। उनके दो शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा एवं महादेव गोविन्द रानाडे कान्ति और अहिसात्मक आन्दोलनों के प्रणेता कहे जा सकते हैं। आजादी के आन्दोलन में सर्वाधिक सत्याग्रही व कान्तिकारी आर्यसमाजी व महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। न केवल स्वतन्त्रता आन्दोलनकारी अपितु इनका नेतृत्व करने वाले लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद, बिस्मिल और शहीद भगतसिंह आदि भी आर्यसमाजी और महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। अतः आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक योगदान यदि किसी का था तो वह महर्षि दयानन्द व उनकी संस्था आर्यसमाज का ही मानना होगा। दुःख एवं खेद की बात है कि देश के आजाद होने पर महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के योगदान की उपेक्षा की गई और उसे भुला दिया गया। इसका कारण इन विषयों का निर्णय करने वाले लोग आर्यसमाज के प्रति पक्षपात रखने वाले व विरोधी विचारधारा वाले थे। सत्य कभी छिप नहीं सकता अतः कभी न कभी महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सर्वोपरि योगदान को देश को स्वीकार करना ही होगा। हम यह भी कहना चाहते हैं कि 15 अगस्त, 1947 को प्राप्त स्वतन्त्रता अधूरी है। जब तक सभी देशवासी वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं को स्वीकार कर उनका आचरण नहीं करते, यह स्वतन्त्रता खतरे में रहेगी। अतः वेद प्रचार देश की स्वतन्त्रा के लिए परमावश्यक कार्य है। सत्य, तर्क, ज्ञान व मानव हित की दृष्टि से यही राजधर्म होना चाहिये।

पता : 196 चुक्खुवाला-२, देहरादून-२४८००१

२९ अगस्त श्रावणी विशेष

मन्थनात्मक

आर्यो वेद-प्रचार सप्ताह सच्चे अर्थों में मनाओ

पं. जगदीशचंद्र वसु

सनातन वैदिक पर्व श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान पर्व है। इस पर्व का सीधा सम्बन्ध गृह्य सूत्रों में वेद और वैदिकों से दिखलाया गया है। श्रवण नक्षत्र की पूर्णिमा को यह पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इसी कारण इसे श्रावणी पर्व कहते हैं। यह मास श्रावणी मास भी इसी आधार पर कहलाता है।

यह पर्व प्रतिवर्ष श्रावणी से लेकर कृष्ण जन्माष्टमी तक आर्य जगत् में वेद प्रचार सप्ताह के रुप में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में विशेष हवन यज्ञ किया जाता है। नये यज्ञोपवित धारण किये जाते हैं हैदराबाद सत्याग्रह के हुतात्मा आर्यवीरों का बलिदान दिवस मनाकर उनको श्रद्धांजलि भेंट की जाती है। वेद प्रचार सप्ताह में प्रातः प्रभात फेरियां की जाती है। विशेष यज्ञ किये जाते है और रात्रि को वेद कथा और वेद सम्बन्धी व्याख्यान आदि कराये जाते हैं। जन्माष्टमी के दिन योगीराज भगवान् कृष्ण के जन्मदिन की पुण्य स्मृति में व्याख्यान होते हैं और वेद प्रचार सप्ताह के प्रति कर्त्तव्य की समाप्ति समझी जाती है। सभाओं से वेद प्रचार की अपील भी इस सप्ताह पर आती है उन्हें भी वेद प्रचार राशि दी जाती है। किसी किसी आर्यसमाजों में प्रचार हेतु ट्रैक्ट भी बांटे जाते हैं। यह काम है जिसके अनुसार वेदप्रचार सप्ताह मनाया जाता है। आर्यसमाज के दूसरे पर्व रस्मी तौर पर मनाये जाते हैं और यह भी इसी रुप में। परिणाम न उसका कुछ निकलता है और न इसका। एक परम्परा के रुप में पौराणिकों या हिन्दुओं की भांति हम आर्यों के पर्व भी मनाए जा रहे हैं।

आर्यसमाज का लक्ष्य अपने पर्वों को रीति या रिवाज के रुप में नहीं प्रत्युतः धर्म या कर्त्तव्य की भावना को सामने रख कर मनाना है और फिर इस भावना से मना कर जो व्रत या संकल्प इस दिन किये जाए उन्हें पूरा करना भी अपना धर्म समझना है। दुःख से लिखना पड़ता है कि आज यह भावना हमारे अन्दर से निकल रही है। इसलिए मैं सभी आर्यसमाजों एवं अन्य आर्य संस्थाओं से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस वर्ष जहाँ वेद प्रचार सप्ताह विशेष समारोह से मनाना कर्त्तव्य समझे वहां धर्म और कर्त्तव्य एवं व्रत को पूरा करने की भावना को भी न भूलें और क्रियात्मक रुप से वेद प्रचार सप्ताह मनायें।

सबसे पहले श्रावणी (रक्षाबन्धन) का पर्व है। सब आर्यसमाजें, स्त्री आर्य समाजें और आर्य वीर दल तथा अन्य आर्य संस्थायें इस दिन विशेष समारोह से प्रभात फेरियां निकाले, उसके पश्चात् आर्यसमाजों में विशेष यज्ञ किये जायें, जिससे श्रावणी के पर्वों की पद्धति के अनुसार यज्ञ हो, इस अवसर पर कोई आर्य नर नारी ऐसा न हों जिनके यज्ञोपवीत संस्कार न हुए हों, अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित करके यज्ञोपवीत संस्कार कराकर यज्ञोपवीत पहना दिये जायें। जो यज्ञोपवीत पहनते हैं, वे पुराने उतार कर नये यज्ञोपवीत पहने और सब मिलकर स्वाध्याय करने का व्रत लें। केवल मौखिक नहीं प्रत्युतः क्रियात्मक रुप में व्रत पालन के दृढ़ निश्चय से। समाजें और संगठन वे ही उन्नति करते हैं जिनके सदस्य व्रत लेकर उन्हें पूरा करते हैं। जो व्रत धारण करके उन्हें छोड़ देतें हैं वे पतन और अवनति के गर्त में ही गिरते हैं। हम देखते हैं कि सैकड़ों आर्यसमाजों में प्रतिवर्ष वेद प्रचार सप्ताह में श्रावणी के पर्व पर यज्ञ के पश्चात भारी संख्या में यज्ञोपवीत बदल कर वेद के स्वाध्याय का व्रत लिया जाता है, परन्तु उस व्रत के पालन का पता इस बात से लगता है कि कितना वेद का स्वाध्याय आर्यों में बढ़ रहा है, कितने घरों में वेद और वैदिक ग्रन्थ हैं। उत्तर में लज्जा से सिर झुक जाता है। हमारे वैदिक धर्म का आधार वेद हैं। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम - वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। परन्तु यह एक वास्तविकता है कि यह परमधर्म ही हमारा गौण धर्म बना हुआ है।

मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ कुरान है । कोई भी मुसलमानों का घर ऐसा न होगा जिसमें कुरान न हो । बल्कि एक-एक घर में दो दो, तीन तीन कुरान होते हैं । हमने सुना है कि पाकिस्तान बनने पर जो मुसलमान पूर्वी पंजाब से पाकिस्तान गए उनके घरों में कितने ही कुरान निकले । मुसलमान नर नारी और छोटे लड़के-लड़कियां भी कुरान पढ़ते हैं । सिखों में भी अपने गुरु ग्रन्थ साहब के लिए कितनी श्रद्धा, प्रेम व उसके पढ़ने की भावना और प्रचार है, यह भी हमारे सामने है । आर्यसमाज की उन्नति एवं सुदृढ़ संगठन के लिए उससे धार्मिकता के प्रचार के लिए उसे वास्तविक अर्थों में वैदिक धर्मी, आर्यसमाज बनाने के लिए वेद के पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने के नियम का पालन न करने की इस त्रुटि को दूर करने का श्रावणी के पर्व को मनाते हुए हमें अवश्य दृढ़ व्रत लेना होगा और उसे पूरा कर दिखाना होगा । कोई समाज ऐसा न हो, जिसमें मूल चारों वेद उनके भाष्य और वेदों के स्वाध्याय के प्रमुख ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि आदि न हों । अधिक से अधिक आर्य परिवारों में भी मूल चारों वेद और वेद भाष्य होने चाहिए जो पूरा वेद भाष्य न हो तो थोड़ा थोड़ा करके ला सकते हैं । वेद के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थ भी मंगवाकर स्वाध्याय कर सकते हैं ।

आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार है । अन्य कार्य गौण हैं । अन्य परोपकार आदि कार्य धर्म हो सकते हैं । प्याऊ लगवाना, धर्मशाला बनवाना, अस्पताल खोलना आदि धर्म हो सकते हैं, परन्तु वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना यही परम धर्म है अन्यथा नहीं । इसीलिए महर्षि दयानन्द ने हम सब आर्यों को वेदप्रचार का विशेष उत्तरदायित्व सौंपा है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेदप्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार प्रसार में समय लगायें, तभी अज्ञान अन्धकार नष्ट होकर वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाकर मानव दुखों से छूटकर सुखों को प्राप्त कर सकेगा । श्रावणी का पर्व हमें इसी ओर चलने की प्रेरणा देता है । आर्य जाति परम्परा से इस पर्व को मनाती चली आ रही है कि इस दिन आर्य नर नारी यज्ञ करके यज्ञोपवीत बदल कर वेद के स्वाध्याय का व्रत लें । प्राचीन काल से ही आर्यों ने वेद की रक्षा की और उसका प्रचार प्रसार किया है। जब यह परम्परा नष्ट होने लगी तो वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना कर इसकी रक्षा तथा प्रचार प्रसार का कार्यक्रम परमधर्म के रुप में हमारे सामने प्रस्तुत किया । हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम अपनी अधिक से अधिक शक्ति उस परम धर्म के कार्यों में लगायें ।

श्रावणी के दिन रात्रि से वेद कथा का आयोजन किया जाता है । इन कार्यक्रमों में वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या की जाये और उनका महत्व बताया जाये वेद सम्बन्धी ट्रैक्ट मंगा कर जनता को निःशुल्क वितरण की जाये । हो सके तो मूल और वैदिक स्वाध्याय के ग्रन्थ भी रिआयती मूल्य पर दिये जाये ताकि जो सज्जन अधिक मूल्य की दृष्टि से न ले सकते हों, वे भी ले सके। ये थोड़े से विचार मैंने श्रावणी के पर्व को मनाने के लिए लिखे हैं । पूरी आशा है कि इन्हें लक्ष्य में रखकर श्रावणी का पर्व मनाया जाएगा और फिर हम अनुभव करेंगे कि श्रावणी के पश्चात् आर्यसमाज में वेद और वैदिक साहित्य के स्वाध्याय के लिए अपूर्व उत्साह आ गया है ।

विश्व-संस्कृत-दिवस

प्रत्येक कार्य का आरम्भ लघु होता है फिर वह महान् होता जाता है । इस दृष्टि से विश्व संस्कृत दिवस का लघु रुप व्यक्ति संस्कृत दिवस, फिर ग्राम-संस्कृत दिवस, जिला संस्कृत दिवस, प्रान्त संस्कृत दिवस, राष्ट्र संस्कृत दिवस अन्त में विश्व संस्कृत दिवस का क्रम होता है । किन्तु यह उतावलापन क्यों ? लगता है कि संस्कृत बोलने में झिझक महसूस हुई इसलिए विश्व की संस्कृतज्ञ लोग अपने साथ समेटने के लिए विश्व संस्कृत दिवस मनाया जा रहा है । यह तो बिलकुल सत्य है, " एकोऽहं बहुस्याम" न्याय से अकेला संस्कृत चिन्तक, वक्ता, श्रोता होने से काम नहीं चलने वाला, व्यक्ति, ग्राम, जिला, प्रान्त, राष्ट्र और विश्व की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, रेखाचित्र बनाकर उसमें विविधाकृति बनाकर रङ्ग भरना पड़ेगा । श्रवणा नक्षत्र जिस पौर्णमासी को पड़े वह "श्रावणी पूर्णिमा" है । नक्षत्र का नामकरण परमात्मा ने वेदों के श्रवणार्थ ही किया है । श्रावण मास से चार मास तक वेदों का स्वाध्याय जोरों पर किया जाता रहा है । इसीलिए बहुधा चिन्तन करके श्रावणी पूर्णिमा को विश्व संस्कृत दिवस घोषित किया गया है । -सम्पादक

<u>विश्लेषणात्मक</u> महाभारतादि में तीर्थ

- महात्मा चैतन्यमुनि

'तृ' धातु में 'थ' प्रत्यय जोड़ने पर तीर्थ शब्द की उत्पत्ति होती है तथा इसका शाब्दिक अर्थ होता है, 'जिससे तरा जाए।' आजकल लोगों ने अनेक प्रकार के तथाकथित तीर्थों की कल्पनाएँ कर रखी है जिससे वास्तविक तीर्थों से व्यक्ति बहुत दूर चला गया है । जिस प्रकार धर्म का सरलीकरण करके उसे केवल बाहरी चिह्नों तक ही सीमित कर दिया गया है, वैसे ही अज्ञानता के कारण केवल कुछ स्थान विशेष पर जाने और कुछ नदियों एवं तालाबों में स्नान करने को ही तीर्थ मान लिया गया है मगर यह सुनिश्चित बात है कि जिस प्रकार मात्र बाहर के चिन्हों को धारण करने भर से ही व्यक्ति धार्मिक नहीं हो जाता है, ठीक इसी प्रकार इन बाह्याण्डबरों से भी व्यक्ति का कल्याण नहीं हो सकता है। इन स्थावर स्थानों एवं नदियों आदि को संभवतः इसलिए तीर्थ मान लिया गया क्योंकि तीर्थ शब्द का एक अर्थ नदी का किनारा या घाट भी होता है । लगता है कि धीरे-धीरे तीर्थ शब्द इसी रुप में रूढ़ हो गया और लोग प्रायः इन स्थावर तीर्थों को ही तीर्थ मानकर अपना समय और धनादि बर्बाद करते हैं जबकि इनसे व्यक्ति का कल्याण कदापि नहीं हो सकता है ।

आज जो तीर्थ माने जाने लगे है उनमें बद्रीनाथ, रामेश्वरम्, द्वारका तथा जगन्नाथपुरी चार धाम के रुप में विख्यात् है । इसके अतिरिक्त हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक इन्हें कुम्भ स्थल माना जाता है । शंकराचार्य जी से संबंधित ज्योर्तिमठ, गोवर्धन मठ, श्रृंगेरीमठ और शारदामठ, इसके अतिरिक्त पुष्कर तथा मानसरोवर आदि पंच सरोवर, नासिक, प्रयाग आदि पंच पवित्र तीर्थ, बद्रीनाथ व द्वारकानाथ आदि पंच नाथ, अयोध्या, मथुरा व काशी आदि सप्त पुरियां, गंगा, यमुना व सरस्वती आदि सात नदियां, विन्ध्यांचल व महेन्द्रगिरि आदि सात पर्वत, श्री बद्रीनाथ व नृसिंहबद्री आदि सप्त बद्री, कुरुक्षेत्र एवं गया आदि सप्त सरस्वती, हरिक्षेत्र व प्रभास क्षेत्र आदि सप्तक्षेत्र, श्री बल्लालेश्वर व श्री महागणपति आदि अष्ट विनायक, केदारनाथ व सोमनाथ आदि द्वादश ज्योर्तिलिंग, तीर्थराज प्रयाग एवं हरिप्रयाग आदि चतुदर्श प्रयाग, वाराणसी क्षेत्र व नन्दाक्षेत्र आदि इक्यावन सिद्धक्षेत्र, जहां-जहां सत्ती के अंग के टुकड़े गिरे वे बावन शक्तिपीठ । इसके अतिरिक्त यदि आज इन तथाकथित तीर्थों की गणना करने लगे तो हजारों-लाखों ही ऐसे तीर्थ कल्पित कर लिए गए हैं जिनका वास्तव में तीर्थ नाम से कोई सरोकार नहीं । केवल हिन्दुओं ने ही नहीं बल्कि अन्य मत-मजहब वालों ने भी इसी प्रकार के अनेकानेक तथाकथित तीर्थ कल्पित कर लिए हैं, जहां जाकर वे अपने आप को कृत-कृत्य मान लेते हैं... जब तक व्यक्ति अपने स्वार्थ, अज्ञानता और बिना भोगे पापों से मुक्ति पाने की मानसिकता से ऊपर नहीं उठेगा, वह और भी अधिक पतन की गहरी खाईयों में गिरता चला जायेगा । जितना धन एवं समय आदि व्यक्ति इन बाह्य आडम्बरों पर लगाता है उतना यदि सच्चे वैदिक तीर्थों के कार्यान्वियन में लगाए तो वास्तव में ही उसका कल्याण हो जाए मगर इस प्रकार की अन्धश्रद्धा में पता नहीं कितने ही जन्मों को व्यक्ति बर्बाद कर देता है। यह बात सुनिश्चित है कि उसका कल्याण तो तभी होगा जब सच्चे तीर्थों को जानेगा तथा उनमें वास्तविक स्नान करेगा । असल में आज व्यक्ति श्रद्धा और अन्धश्रद्धा में भी भेद नहीं कर पा रहा है इसलिए अन्धश्रद्धा में भटकते-भटकते ही पूरा जीवन बर्बाद कर देता है। केवल जीवन ही नहीं बल्कि कितने ही जन्मों को बर्बाद कर देता है । महाभारत में महाराज युधिष्ठिर जी जब भीष्मपितामह जी से श्रेष्ठ तीर्थ के सम्बन्ध में पूछते है तो पितामह कहते है (अनुशसन पर्व) -

सर्वाणि खलु तीर्थानि गुणवन्ति मनीषिणः ।
यत्तु च शौचं च तन्मे श्रृणु समाहितः ॥
अगाधे विमले शुद्धे सत्यतोये धृतिहृदे ।
स्नातव्यं मानसे तीर्थे सत्वमालम्ब्य शाश्वतम् ॥
तीर्थशौचमनर्थित्वमार्जवं सत्यमार्दवम् ।
अहिंसा सर्वभूतानामानृशंस्यं दमः शमः ॥
निर्ममा निरंहकारा निर्द्वन्द्वा निष्परिग्रहाः ।
शुचयस्तीर्थभूतास्ते ये भैक्ष्यमुपभुंजते ॥
नोदकक्लिन्नगास्तु स्नात इत्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नातः स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
वृत्वशाँ मनःशौचं तीर्थशौचमतः परम् ।
ज्ञानोत्पन्नं च यच्छौचं परमं स्मृतम ॥
मनसा च प्रदीप्ने ब्रम्हज्ञानजलेन च ।
स्नाति यो मानसे तीर्थे तत्सनानं तत्वदर्शिनः ॥

इस पृथिवी पर जितने तीर्थ है, वे सब मनीषी लोगों के लिए गुणकारी होते हैं, किन्तु उन सब में जो परम पवित्र और प्रधान तीर्थ है, उसका वर्णन करता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो। जिस धैर्यकुण्ड में सत्यरुप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल और अत्यन्त शुद्ध है, उस मानस तीर्थ में परमात्मा का आश्रय लेकर स्नान करना चाहिए। कामना और याचना का अभाव, सरलता, सत्य, मृदुता, अहिंसा, समस्त प्राणियों के प्रति वैर त्याग, इन्द्रिय संयम और मनोनिग्रह - ये ही मानस तीर्थ के सेवन से प्राप्त होने वाली पवित्रता के लक्षण है। जो ममता, अहंकार, राग-द्वेषादि द्वन्द्व और परिग्रह से रहित तथा भिक्षा द्वारा जीवन-निर्वाह करते हैं, वे विशुद्ध, अन्तःकरण वाले सज्जन तीर्थ स्वरुप है। शरीर को पानी से भिगो लेना स्नान नहीं कहलाता। वस्तुतः सच्चान स्नान तो उसने किया है जिसने मन-इन्द्रियों के संयमरुपी जल में गोता लगाया है, वही बाहर और भीतर से भी पवित्र माना गया है। आचारशुद्धि, मनःशुद्धि, तीर्थशुद्धि और ज्ञानशुद्धि - ये चार प्रकार की शुद्धि मानी गई है। इनमें भी ज्ञान से प्राप्त होने वाली शुद्धि सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। जो मनुष्य प्रसन्न और शुद्ध मन से ब्रह्मज्ञानरुपी चल के द्वारा मानस तीर्थ में स्नान करता है, उसका वह स्नान ही तत्वदर्शी ज्ञानी का स्नान माना गया है।

स्कन्द पुराण के रेवा खण्ड के अन्तिम पांच अध्यायों में श्रीसत्यनारायण कथा का वर्णन आता है। इन पांच में १६२ श्लोक है। जिनमें बताया गया है कि श्री सत्यनारायण व्रत कथा सुनने तथा व्रत धारण करने से दुःखी ब्राह्मण सुखी हो गया, एक लकड़हारा धन तथा पुत्र से सम्पन्न हो गया और अन्त में स्वर्ग में जा पहुंचा, एक राजा तथा एक वणिक को पुत्र लाभ हुआ, व्रत को भूल जाने से वणिक कष्ट में भी पड़ गया। इस प्रकार की अनेक बातें लिखी है मगर केवल महात्म्य ही सुनाया जाता है वह व्रत क्या है इसका उल्लेख नहीं किया जाता जबकि स्कन्द पुराण के इसी अध्यायन के आरम्भ में ही बताया गया है कि नैमिषारण्य तीर्थ सब तीर्थों में उत्तम और श्रेष्ठ है। अब प्रश्न यह है कि यह नैमिषारण्य तीर्थ कहां पर है ... कथा का आरम्भ होता है- **एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः । पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु ॥** अर्थात् एक समय नैमिषारण्य में शौनकादि ऋषियों ने पौराणिक सूत से पूछा- **व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वांछितं फलम् ।तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने ॥** अर्थात् हे महामुने ! व्रत या तप करके जैसे भी मनुष्यों का कल्याण हो उसे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो, वह कृपा करके कहिए, ऐसी हम सबकी इच्छा है। .. संक्षिप्त से बताएं जिससे प्राणी समस्त दुःखों से छूट जाएं... लखनऊ और सीतापुर के बीच में एक स्थान है, नीमसार।

प्राचीनकाल में यही नैमिषारण्य कहलाता था। यहां एक बहुत बड़ा तालाब है, पहले यह यज्ञकुण्ड रहा होगा। इसमें घी की धाराएं पड़ती थी... बड़े बड़े यज्ञ होते थे .. कथा-वर्त्ताएं होती थीं। महान् योगी और ऋषि-मुनि एकत्रित होकर ज्ञान-चर्चा करते थे। शौनक यहां के कुलपति थे। नैमिषारण्य जंगल को भी कहते हैं... हृदय गुफा रुपी जंगल जहां नारद जी ने पहुंच कर नारायण से ऐसा उपाय पूछा था कि संसार के लोग सब दुःकों से छूट जाएं। वास्तव में तीर्थ ही दुःख सागर से तारने वाले होते हैं इसलिए उन्हीं का अनुकरण करने का व्रत लेना चाहिए। इसी स्कन्द पुराण के काशी खम्ड में मानस तीर्थों का वर्णन आता है। इस सम्बन्ध में लोपामुद्रा ने अगस्त्य ऋषि से पूछा तो उन्होंने

कहा - श्रृणु तीर्थानि वदतो मानसानि ममानध्ये । येषु सम्यङ्-नरः स्नात्वा प्रयाति परमां गति ॥ हे निष्पापे ! मैं मानस तीर्थों का वर्णन करता हूँ, सुनो इन तीर्थों में स्नान करके व्यक्ति परम गति को प्राप्त होता है -

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थेइन्द्रिय निग्रहः ।
सर्वभूत दया तीर्थं तीथमार्जव मेव च ॥
दानं तीर्थं दमस्तीर्थ संतोषस्तीर्थमुच्यते ।
ब्रह्मचर्य परं तीर्थं च प्रिय वादिता ॥
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं तपस्तीर्थमुदाहृतम् ।
तीर्थानामपि तत्तीर्थ विशुद्धिर्मनसः परा ॥
नजलाप्लुत देहस्य स्नानमित्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नातः शुचिः शुद्धि मनो मलः ॥
(काशी खण्ड ६-२९ से ३३)

अर्थात् सत्य, क्षमा, इन्द्रिय, संयम, प्राणियों के प्रति दया, सरलता, दान, मन का दमन, सन्तोष, ब्रह्मचर्य, मीठा प्रिय बोलना, ज्ञान, धृति और तप ये सब तीर्थ है। जल में डूबकी लगाने को तीर्थ-स्नान नहीं कहते, बल्कि इन तीर्थों में डूबकी लगाना ही सच्चा तीर्थ है।

पता - महादेव, सुन्दरनगर,-१८४४०१ हि.प्र.

श्रावणी

वेद ही जग में हमारा ज्योति जीवन-सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा, पूज्य प्राणाधार है ॥टेक॥

❀ ❀ ❀

सत्यविद्या का विधाता, ज्ञान गुरुगण गेय है।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्म धी का ध्येय है ॥
वेद ही परमेश प्रभु का प्रेम पारावार है ॥॥१॥

❀ ❀ ❀

ब्रह्म-कुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा।
वैश्य-वेश विभूषिता है, शूद्र-कुल स्वामी महा ॥
वेद ही वर्णाश्रमों का आदि है, आधार है ॥२॥

❀ ❀ ❀

श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव पुण्य पावन पर्व है।
वेदव्रत स्वाध्याय वैभव, आज ही सुख सर्व है ॥
वेदपाठी विप्रगण का दिव्य दिन दातार है ॥३॥

❀ ❀ ❀

वेद का पाठन-पठन हो वेद-वाद विवाद हो।
वेद हित जीवन मरण हो वेद-हित आह्लाद हो ॥
आर्यजन का आज से व्रत विश्व वेद-प्रचार है ॥४॥

❀ ❀ ❀

"विश्व भर को आर्य करना" वेद का सन्देश है।
"मृत्यु से किंचित् न डरना" ईश का आदेश है ॥
सृष्टि-सागर में हमारा, वेद ही पतवार है ॥५॥

❀ ❀ ❀

रोज-रोज सरोज सम श्रुति सूर्य से खिलते रहें।
वेद-चन्द्र चकोर हम, द्युति मोद से मिलते रहें ॥
वेद ही स्वामी सखा सब, वेद ही परिवार है ॥६॥

वैदिक धर्म विशारद, श्री सूर्यदेव शर्मा

अन्धविश्वास

तान्त्रिकों का फैलता जाल

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

ऋषि दयानन्द ने अन्ध विश्वास व पाखण्डों से दूर रहने को कहा उन्होंने भागवत पुराण तथा पुराणों में जो अवैदिक मान्यताऐं भरी पड़ी है, उनकी जनता के सामने पोल खोली पुराणों में भारतीय पुरातन संस्कृति को धूमिल किया गया है । श्रीकृष्ण का चरित्र तो अत्यधिक विकृत करके रखा हुआ है । ऋषियों को मछली मकड़ी तथा अन्य जन्तुओं कीटों से उत्पन्न बताया है । इसी प्रकार से अनेक कमियां है, इन पुराणों में और सबसे भयानक रोग है मूर्ति पूजा । मूर्ति पूजा अवैदिक है एक अन्धविश्वास है इन पाखण्ड पूर्ण बातों से समाज अवनति की ओर चलता है ।

आज गांव व नगरों तथा कस्बों आदि में भूत-प्रेम, झाड़-फूंक, तांत्रिक कर्मों का बहुत बड़ा जाल फैला हुआ है जो कि विज्ञान के विपरीत अवैदिक कर्म है, झाड़-फूंक वाले जितने भी तांत्रिक आदि कर्म है इससे अज्ञान बढ़ कर दुष्कर्म और अधिक बढ़ जाते हैं । ईर्ष्या द्वेष लड़ाई झगड़े बढ़ कर दुःख बढ़ जाते हैं, दरिद्रता आती है ।

आज भारत में अनेक स्थान है जहां इस प्रकार के मेले तक लगते हैं । जहां झाड़ फूंक वालों की भीड़ रहती है, भूत-प्रेत उतारने वाले अपनी अफनी दुकाने सजाकर बैठते हैं । अब साधारण जनता भोले भाले लोग जिनके मन में वेद के ज्ञान का प्रकाश ही नहीं ऐसे लोग वहां बहुत जाते हैं । ये लोग पाखण्ड अन्धविश्वासों में ही रहते हैं । इस कार्य में बलि भी दी जाती है । मूर्गा बकरा भैंस और यहां तक कि मनुष्य के बच्चे उठाकर उनकी भी बलि दे दी जाती है। ऐसे दुष्कर्मियों में ऐसी स्त्रियां अधिक होती है, जिनके बच्चे नहीं होते, दौरे पड़ते हों, किसी अनिष्ट करने की दुर्भावना हो, अमीर बनने की चाह हो, लम्बी बीमारी हो या लड़ाई झगड़ा हो औरत अपने पति को वश में रखने हेतु, सास, बहू एक दूसरे को वश में रखने आदि अनेक प्रकार के लोभ व लालच पाखण्डों हेतु ऐसे कर्म व कृत्य करते कराते हैं । अज्ञानी, अनपढ़, धूर्त व मूर्ख, लोभी, लालची, निकम्मे दूसरों का अहित चाहने वाले लोग ऐसे तान्त्रिक कर्मों में फंस जाते हैं तथा इसका जाल ऐसे स्त्री-पुरुष परिवारों पाखण्डियों द्वारा एक से दूसरे व दूसरे से तीसरे तक सम्पर्क द्वारा पहुंचाता है ।

कहीं यदि कोई क्षति हो गई, मृत्यु हो गई, बीमारी हो गई तब ऐसे में ये तान्त्रिक अपना शिष्य वहां भेजते हैं, पड़ौसी या मिलने वाले के द्वारा कहलवाते है कि तुम्हारके यहां ग्रह दोष है, वृहस्पति, शनि रुठा हुआ है, इस दोष को अमुक व्यक्ति झाड़-फूंक द्वारा दूर कर सकता है । कुछ दान दक्षिणा तो देना ही होगा । कोई कहेगा कि भूत-प्रेत का चक्कर है, हवा का चक्कर है, तुम्हारे देवता रुठे हैं, इस प्रकार अज्ञानी लोगों को यह लोग भ्रमित कर अपने जाल में फंसा लेते हैं और यह भी कहते हैं कि किसी को बताना मत । मुरादाबाद में चार मजार है, जहां प्रतिवर्ष बड़े-बड़े मेले लगते है, सहस्रो लोग जहां झाड़ फूंक व तान्त्रिक कर्मों के लिए ही जाते है । मजार जिस पर चादर चढ़ाते व अपनी मनोकामना पूरी होने के लिए मन्नत करते है, सहारनपुर में भी नौ मजार पीर है जहां प्रतिवर्ष मेला लगता है लोग वहां चादर चढ़ाने आते हैं यहां तान्त्रिक अपनी दुकान चलाते हैं। ऐसे मजार पीर स्थान स्थान पर मिल जाएंगे आसाम, लद्दाख, उत्तरांचल, उ.प्र., म.प्र., हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, बिहार, बंगाल में अधिकांश स्थानों पर झाड़ फूंक होती है, मजारों पर लोग जाते हैं ।

भरतपुर में भी ऐसा स्थान है जहां मस्तिष्क रोगी बड़ी संख्या में झाड़-फूंक कराने पहुंचते हैं, वहां तान्त्रिक कर्म भी होते हैं, परन्तु यह सब अन्धविश्वास है, अनेक रोगी यहां आकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं क्योंकि वह अच्छे हॉस्पिटल आदि से तान्त्रिक कर्म हेतु लाते हैं और चिकित्सा के अभाव में उनकी मृत्यु हो जाती है ।

तान्त्रिक कर्म मात्र एक अन्धविश्वास है, तान्त्रिक लोग शरीर पर कालिख पोत सिर पर जटा बढ़ाकर बालों

को फैला लेते व भांति भांति के रुप रचते है, जो डरावने लगते हैं, हाथ में मनुष्य की कपाल रखते फिरते हैं भांति भांति की आवाज निकालते हैं। झाड़-फूंक कराने वाले को भय दिखाते है, तू कहां से आया, कहां रहता है, तुझे जाना पड़ेगा ऐसे ऐसे वाक्य बोलते हैं दिमाग से अस्वस्थ व्यक्ति भी कुछ का कुछ बोल पड़ता है। यह कोई वैज्ञानिक कर्म नहीं है न ज्ञान विज्ञान का कोई विषय है मात्र अन्धविश्वास पाखण्ड है इसका जाल चारों ओर फैला हुआ है स्थान स्थान पर गांव गांव में तान्त्रिक मिल जाएंगे।

तान्त्रिक और तान्त्रिक कर्म समाज के शत्रु है मानवता के शत्रु है समाज में अज्ञानता बढ़ती है, दुराचार बढ़ते है बलिप्रथा को बढ़ावा मिलता है घरों में आपस में भेदभाव बढ़ता है। ईर्ष्या व द्वेष बढ़ते है, ऐसे दुष्कर्मों से सावधान रहना चाहिए। आर्यसमाज को भी चाहिए कि झाड़-फूंक तान्त्रिक कर्म, भूत-प्रेत, हवा, वायु का चक्कर इन सबका विरोध करें, जनता को इसके दुष्प्रभावों से जागरुक करना चाहिए, तान्त्रिक कर्म एक अज्ञान व अन्धविश्वास है, सरकार को भी चाहिए कि ऐसे तान्त्रिकों, स्थानों व दुष्कर्मों पर रोक लगाए।

पता : गली नं. २, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा २०३१३१

ओ सेनानी बलिदानी

महाक्रान्ति के ओ सेनानी, बलिदानी,
सौ सौ बार नमन करता है राष्ट्र तुम्हें
भारत की आजादी के दीवाने तुम
तुम्हें न कोई भय, आतंक डरा पाया
क्रूर शिकंजे तुम्हें न बांध सके कोई
दृढ़ निश्चय से कोई नहीं डिगा पाया
तुमने भीषण ज्वार जगाये सागर में
तुमने लहरों में तूफानी रोष भरा
श्रद्धा-सुमन समर्पित है तुमको वीरों
हृदय से स्मरण कर रहा राष्ट्र तुम्हें
कांप उठा अत्याचारी ब्रिटिश शासन
सिंहासन थर्राया डांवाडोल हुआ
सूली, संगीनों का बज्र हृदय डोला
अगणित बलिदानों का ऐसा दौर हुआ
तुमने अमर क्रान्ति की ऐसी नींव रखी
धरती का हर कोना-कोना जाग उठा
शुभ दिन आया क्रूर कालिमा छितर गई
दिव्य आत्माओं ! वंदन है आज तुम्हें
महाक्रान्ति के ओ सेनानी, बलिदानी,
सौ सौ बार नमन करता है राष्ट्र तुम्हें

रचयिता : राम आर्य व्यथित, १८६, आर्य निकुंज,
शिक्षक कालोनी, विदिशा (म.प्र.)

कविता :-

वेद हमारी माता जग में....

- आचार्य रणवीरार्य

वेद हमारी माता जग में वेद हमारी माता।
केवल बेटे नहीं उसके उससे सारा नाता ॥१॥

✳

परम-दयालु परमेश्वर ने जग में यज्ञ रचाया।
धर्म-अर्थ और काम-मोक्ष का वेद से ज्ञान कराया ॥२॥

✳

ऋक् अग्नि से यजु वायु से सामादित्य से आया।
अथर्वाङ्गिरस् से मानव ! वसुन्धरा पर आया ॥३॥

✳

माता की छाया में रहकर सुख-ऐश्वर्य बढ़ाया।
सोने की चिड़िया ये भारत विश्वगुरु कहलाया ॥४॥

✳

महीधर-सायण-मोक्षमूलर ने माँ पर दाग लगाया।
माँ का दाग मिटाकर ऋषिवर सत्य-मार्ग दिखलाया ॥५॥

✳

जिस माता से सब कुछ पाया उस माँ को ही भूलाया।
वाह रे मानव ! माता के संग क्या कर्त्तव्य निभाया ? ॥६॥

✳ ✳ ✳

उपादेयात्मक

प्रभु प्राप्ति का मार्ग सेवा एवं समर्पण से प्राप्त होगा

- **कन्हैयालाल आर्य,** कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जो व्यक्ति संसार के सभी जीवों की सेवा करता है उसे सच्चा सेवक कहते हैं । जिसके पास जो साधन है उसी के द्वारा प्रत्येक समय सर्वव्यापी परमपिता परमात्मा की बनाई हुई पीड़ित सृष्टि की सेवा करना ही सच्ची प्रभु भक्ति है । यह बात नहीं कि सेवा केवल धन व तन से ही होती है । सेवा करने के लिए सेवाभाव से भरा मन भी होना चाहिए । वस्तुतः यह जीवन है ही केवल सेवा के लिए, जो व्यक्ति ऐसी भावना बना लेता है, वास्तव में सच्चा सेवक वही है । किसी को यह कभी भी नहीं सोचना चाहिए कि मुझ में सेवा करने की योग्यता या क्षमता नहीं है । संसार की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी प्रकार से सेवा कर रही है । जब जड़ वृक्ष और ज्ञानहीन पशु भी अपने शरीर के द्वारा इस सृष्टि की सेवा करते हैं, तब चेतन और विवेक सम्पन्न मनुष्य सेवा करें, इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? सच्चे लेखक के हृदय में केवल एक ही भावना काम करनी चाहिए कि मैं किस प्रकार अधिक से अधिक और उपयोगी हो सकूंगा । सेवक को सेवा करने में ऐसा विलक्षण सन्तोष और महान् सुख मिलता है कि वह सेवा को छोड़कर अन्य किसी वस्तु की इच्छा नहीं करता ।

इसे एक दृष्टान्त से समझते है - एक बार गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने एक सेवक कन्हैया को कहा कि तुम युद्ध भूमि में घायल सैनिकों को जल पिलाया करो । कन्हैया बिना किसी भेदभाव के सभी घायल सैनिकों को जल पिलाने लगा चाहे वह घायल सैनिक अपने पक्ष के थे या मुगलों के । किसी व्यक्ति ने जब कन्हैया को शत्रुपक्ष के घायल सैनिकों को पानी पिलाते देखा तो उसने गुरु गोविन्द सिंह जी को कन्हैया की शिकायत की - गुरु जी, कन्हैया सेवक तो आपका है, परन्तु वह शत्रु पक्ष के घायल सैनिकों को भी पानी पिलाता है । गुरु गोविन्द सिंह जी ने कन्हैया को अपने पास बुलाया और इसका कारण पूछा । तब कन्हैया ने उत्तर दिया - महाराज ! आपने घायल सैनिकों को पानी पिलाने का कार्य मुझे सौंपा है । आपने अपने आदेश में यह तो कुछ नहीं कहा कि केवल अपने पक्ष वालों को ही पानी पिलाना है । आप ने तो केवल घायल सैनिकों को पानी पिलाने की बात कही है । घायल तो अपने पक्ष के भी होते हैं, शत्रु पक्ष के भी । मैं इसमें कैसे भेदभाव कर सकता हूँ। कन्हैया के इस उत्तर को सुनकर गुरु गोविन्द सिंह जी बड़े प्रसन्न हुए और कहा - कन्हैया ! जब तक इतिहास मुझे स्मरण करेगा, तुम्हारे इस सेवा भाव को कभी नहीं भूला पायेगा । यह है सच्चे सेवक का कर्त्तव्य एवं भक्ति । सेवक में मुख्य रुप से निम्नलिखित गुण होने चाहिए ।

(१) सेवक स्वाभाविक ही सभी के हित में लगा रहता है।

(२) सेवक, वर्ण, जाति, धन, पद आदि में कितना ही ऊँचा क्यों न हो जाये, परन्तु वह अभिमान नहीं करता ।

(३) सेवक किसी जीव से घृणा नहीं करता ।

(४) सेवक सहिष्णु होता है ।

(५) सेवक सबकी बिना भेदभाव के सेवा करना चाहता है ।

(६) सेवक निःस्वार्थ होकर सेवा करता है ।

(७) सेवक सेवा कराने वाले व्यक्ति को हेय दृष्टि से नहीं देखता ।

(८) सेवक मान, अपमान, हानि-लाभ, निन्दा-स्तुति में समदृष्टि रखता है ।

(९) सेवक प्रशंसा में फूलता नहीं और अपमान होने पर दुख नहीं होता ।

जिस व्यक्ति में सेवा भावना नहीं होती वह सांसारिक विषयों के वश में होकर लोभ वश अपना मानव जीवन

व्यर्थ करते है। उन्हें बार-बार अनेक योनियों में जन्म लेकर दुःख भोगना पड़ता है, उसे स्वप्न में भी सच्चा सुख नहीं मिलता। जो आनन्द खिलाने में है, वह खाने में नहीं। जो सुख देने में है, प्राप्त करने में नहीं। इसलिए तो हमारी मातायें पहले परिवार को खिलाती है फिर यदि कुछ बच जाये तो खा लेती है। उन्हें जो आनन्द खिलाने में आता है, वह स्वयं खाने में नहीं आता। इसी प्रकार वह माताओं की माता जगदम्बा माता तो हमें पल-पल हमारी झोली भरती रहती है। परन्तु हम कृतघ्न उसका उपकार नहीं मानते। जीव के उद्धार का एकमात्र यही उपाय है कि वह प्रभु की शरण लेकर मन, वचन और कर्म से सेवा भाव को जीवन का अंग बनाये।

हमारे ऋषि मुनियों ने हमें बार-बार विषयों वासनाओं से बचने और इस दुर्लभ मानव जीवन को प्रभु भक्ति में लगाने के उपदेश दिया है। विषय वासनाओं के वश में होकर जीव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रुपी डाकुओं का शिकार हो जाता है, जो हमारा सब कुछ लूट ले जाते हैं। इसलिए ऋषि मुनियों ने इस मन को विषयों की ओर से हटाकर प्रभु भक्ति में लगाने की चेतावनी दी है। परन्तु प्रभु भक्ति तो तभी हो पायेगी जब हमारी प्रार्थना सार्थक होगी। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो ! मुझ पर दया कीजिये, परन्तु क्या हमने कभी अपने से निम्न स्तर के व्यक्तियों, सेवकों पर कभी दया की है ? यदि नहीं तो हमें प्रभु से दया की याचना करने का कोई अधिकार नहीं है। हम प्रभु को न्यायकारी कहते हैं परन्तु हम सदैव अन्याय करते हैं। ऐसी स्थिति में प्रभु हमारी याचना को क्यों सुनेगा? पहले हमें उस कार्य को जीवन में अपनाना होगा, तभी हमारी प्रार्थना सार्थक होगी। यही सच्ची सेवा है।

इस मन को प्रभु की भक्ति रुपी गंगा से छुड़ाकर ओस की बूंदों से तृप्त करने की आशा छोड़ो। प्यासा पपीहा धुएं के समूह को देखकर उसे बादल समझ लेता है। वहां जाने पर न तो से शीतलता मिलती और न ही जल प्राप्त होता है। उल्टे धुएं से उसकी आंखे और खराब हो जाती है। यही दशा मन की होती है जैसे मूर्ख बाज, कांच के फर्श पर अपने शरीर की छाया को देखकर भूख से व्याकुल हुआ उस पर टूट पड़ता है। और यह भूल जाता है कि चोंच मारने से उसकी चोंच ही टूटेगी। अतः मन को अविद्या के कीचड़ से बचाकर परमेश्वर प्राप्ति के साधनों से लगाओ। कुछ लोग थोड़ी सी सेवा करके ही यह सोचने लगते हैं कि उन्हें स्वामी के दर्शन क्यों न हुए। यह परेशान हो जाता है। फिर सेवा और समर्पण के भाव को त्यागने का मन बना लेता है। वह अभी कार्य करने के पश्चात् अभी फल पाना चाहता है। उसकी स्थिति उस बन्दर की तरह है जिसने अभी-अभी आम की गुठली भूमि में दबाई और साथ ही आम के उत्पन्न होने की आशा लगा लेता है। यही तो हमारा भ्रम है इसी कारण से ही तो हमारा सेवा और समर्पण भाव अधूरा है।

एक दृष्टान्त से इस बात को समझने का प्रयास करते हैं। दो व्यक्ति सेवा, समर्पण, साधना, सत्संग, स्वाध्याय में व्यस्त हैं। उन दोनों तप करने वाले व्यक्तियों के पास एक देवदूत आता है। पहला तप करने वाला व्यक्ति पूछता है- मुझे मोक्ष कब मिलेगा ? देवदूत उत्तर देता है - अभी तो तुम्हें २०० जन्म और लेने होंगे और इस साधना को निरन्तर जारी रखना होगा। यह सुनते ही यह व्यक्ति बहुत दुःखी हो जाता है। वह इस साधनामय कार्य को त्याग देता है कि कौन कम से कम दो सौ मानव जन्मों तक प्रतीक्षा करे। उसका समर्पण अधूरा है। उसका समर्पण लेन देन व सौदेबाजी जैसा है। वह इस साधनामय जीवन को त्यागकर सांसारिक कार्यों में व्यस्त हो जाता है। कुछ समय पश्चात् दूसरा साधना करने वाला व्यक्ति उस देवदूत से पूछता है कि मुझे मोक्ष कल मिलेगा ? देवदूत कहता है- जिस वृक्ष के नीचे बैठकर तुम साधना कर रहे हो, इसमें जितने पत्ते हैं, इतने जन्म लेने के पश्चात् तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी। यह सुनकर दूसरा व्यक्ति आनन्द विभोर होकर नृत्य करना प्रारम्भ कर देता है। वह कहता है- हे प्रभु ! आप का धन्यवाद है इतने जन्म लेने के पश्चात् तो मोक्ष मिल ही जायेगा। अतः वह दूसरा व्यक्ति साधना में व्यस्त हो जाता है। दोनों व्यक्तियों की तुलना करें पहला व्यक्ति शीघ्र फल चाहता है, उसका स्वभाव बन्दर जैसा है, दूसरा व्यक्ति हजारों योनियों के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति को भी उपलब्धि मानता है। यह

है दोनों में अन्तर। पहले का स्वभाव व्यापारी दृष्टिकोण रखता है और दूसरे का स्वभाव समर्पण वाला दृष्टिकोण रखता है। पहला व्यक्ति इदन्न मम में विश्वास नहीं रखता वह **इदन्न मम** (यह मेरा है) में विश्वास रखता है, दूसरा व्यक्ति **इदन्न मम** में विश्वास रखता है। पहले की साधना सेवा समर्पण रहित है। दूसरे की साधना, सेवा एवं समर्पण युक्त है।

जो सेवक कल्पवृक्ष के समान मनचाहा फल देने वाला परमात्मा की सृष्टि की सेवा से जी चुराता है वह सचमुच निकम्मे पत्थर जैसा है। सच्चा सेवक प्रभु का प्रिय हो जाता है। जिस सेवक को अपने स्वामी का बल है उसे कोई भय नहीं लगता। वह सदा के लिए अभय हो जाता है। यदि अभय होना ही समर्पण का एक अंग है। जिस दिन हम सच्चे सेवक बन जायेंगे, समर्पणअ होता जायेगा। समर्पण सार्थक होने पर प्रभु के साक्षात्कार में कोई देरी नहीं होगी।

पता - ४/४४, शिवाजी नगर, गुड़गाँव, हरियाणा

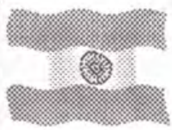

युवाओं की आजादी

अमर शहीदों की लहू की, कीमत ही ना जानी है।
हम आजाद हुए लेकिन, आजादी ना पहचानी॥

बचपन आज शहीद हो रहा, क्रिकेट के मैदानों पर,
और बुढ़ापा खांस रहा है, मदिरा की दुकानों पर,
विलासिता की फिल्म देखने बैठी हुई जवानी है॥
हम आजाद हुए ...... ॥

मिली सभ्यता बड़े घरों की, ऊंची ऐड़ी पर चलते,
आज नग्नता वक्ष चढ़ी है, गोदी में पलते-पलते,
कितनी आजादी पाई, और कितनी की मनमानी॥
हम आजाद हुए ...... ॥

विद्या की अर्थी होते हैं, कालेजों स्कूलों में,
कफन ज्ञान का दफन हुआ, वर्तमान की मूलों में,
गुरु-गोविन्द नशे में दोनों, बढ़िया नींव रखानी है॥
हम आजाद हुए ...... ॥

मरने के रस्ते-सस्ते, पर राह मिली ना जीने की,
किस्मत भी महंगी पड़ती, आज कीमत घटी पसीने की,
मजदूरी की बेटी चिथड़े पहने हुई सयानी है॥
हम आजाद हुए ...... ॥

यौवन की पूंजी पाकर भी, हमने सब कुछ खोया है,
निर्धन को फूटपाथ दिया, पैसा कुर्सी पे सोया है,
यह सब तो पहले भी था, ये झांकी रही पुरानी है॥
हम आजाद हुए ...... ॥

इस आजादी से पहुंचे हम, गहरे और रसातल में,
माटी की अन्न खायें, तो भारत बदलेंगे पल में,
सुनो युवाओं! कदम बढ़ाओं! मौसम अब तूफानी है॥
हम आजाद हुए ...... ॥

रचयिता : डॉ. वेदप्रकाश व्यास, व्यास मेडिको, गैरतंग, जिला-रायसेन (म.प्र.)

संस्कृति चिन्तन

जब तक वेद व्यास न होगा, कोई तुलसीदास न होगा,
परम्परा का भास न होगा, तब तक बन्धु विकास न होगा।
अन्तर की धूमिल अरुणाई, तन्द्रामय जब तक तरुणाई,
मरे हुए मन के मंदिर में, भारत माँ का वास न होगा।

दान का प्रभाव

बोध-कथा

- पं. नारायण शास्त्री, शिक्षक,

यह मत सोचो कि हमारे पास देने को कुछ नहीं है । आपके पास देने के लिए कितना कुछ है । प्रेम का सागर, हँसी के फूल हैं और इन दोनों का कोई मूल्य नहीं लगता । तो भाई ! सोचते क्या हो ? देना शुरू कर दो । तुम्हारी क्यारी के फूल दिन-प्रतिदिन झड़ रहे हैं, जीर्ण होकर झड़ रहे हैं । उन्हें बाँटते चलो ! स्वयं खिलो और दूसरों को खिलाते चलो !

दान की महिमा महान है । वेद कहता है - "**केवलाघो भवति केवलादी ।।**" ऋग्वेद (१०-११७-६) दान न देकर अकेला खाने वाला सचमुच पापी होता है। अतः वेद काआदेश है - '**शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर**' (अथर्व. ३-२४-५) अर्थात् सैकड़ों हाथों से कमा और हजारों हाथों से बांट दे । त्याग कीजिये ! दान दीजिये ! बांट कर खाइए ! आपका दिया हुआ निष्काम भावना से धन स्वर्णमय हो जाएगा। वह आपको कई गुणा होकर पुनः मिल जाएगा । जिस प्रकार का दान आपका है वैसा ही दान का फल भी हमें अवश्य मिलेगा । इस पर एक सुन्दर दृष्टान्त है - एक लड़की थी बड़ी ही सुन्दर । वह सयानी हुई तो माता-पिता को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगी । पिता ने नाई और पुरोहित को बुलाया और कन्या के लिए सुन्दर और होनहार वर ढूंढने को कहा । वर ढूंढ लिया गया । न लड़की ने होने वाले दुल्हे को देखा और न दुल्हे ने होने वाली दुल्हिन को । धूमधाम से विवाह हो गया । लेकिन यह क्या! जब दुल्हिन ने पहली बार अपने पति को देखा तो उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई । वह एकदम काला-कलूटा था । लेकिन पति, गोरी-चिट्टी सुन्दर पत्नी को देखकर फूला न समाया। संयुक्त परिवार था । रात होती तो सास बहु के हाथ में दूध का कटोरा थमाती और कहती - "बहु ! ले, यह कटोरा अपने पति परमेश्वर को दे आ ।" बहु कटोरा लेकर सोने के कमरे में जाती और बिना कुछ बोले, पतिदेव के पास जाकर खड़ी हो जाती । पतिदेव उसके हाथ से दूध कटोरा लेते और झट पी जाते ।

कई दिन बीत गए। हर रोज ऐसा ही होता । एक दिन पतिदेव सोचने लगे - "आखिर वह मेरी पत्नी है। यह चुपचाप क्यों रहती है ? कुछ बोलती क्यों नहीं ? उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि आज तो पत्नी को बुलवा कर ही रहूंगा । जब तक वह - 'लो जी, दूध पी लो' कहकरकटोरा मेरे हाथ में नहीं थमाएगी, मैं कटोरे के लिए अपना हाथ नहीं बढ़ाऊंगा। और वही हुआ। पत्नी जब दूध का कटोरा लेकर आई तो वह चुपचाप लेटा रहा । उसने कटोरे की ओर हाथ नहीं बढ़ाया। बेचारी पत्नी कटोरा थामे खड़ी रही ।सारी रात वहीं खड़ी रही । न तो वह कुछ बोली और न ही पति ने कटोरा थामा । आखिर सुबह हो गई । पति को पत्नी पर बड़ा तरस आया । उसने बोला- 'आज मैंने इसे कितना दुःख पहुंचाया है । लगता है, इसे मेरे साथ रहना अच्छा नहीं लगता । यह मेरे साथ रहकर जरा भी प्रसन्न नहीं है । इस तरह इसे पत्नी बनाकर रखना, इस बेचारी के साथ घोर अन्याय करना होगा ।'

पति उसे उसके पीहर (मायके) छोड़ आया । लेकिन वह वहाँ भी कैसे खुश रह सकती थी । बेचारी घुट-घुटकर मरने को हो गई । लेकिन उसे कोई रोग तो था नहीं। वह देखने में तो एकदम भली-चंगी लगती थी। उसके माँ-बाप को भी उसके निराले रोग की चिन्ता होने लगी । वे कई वैद्यों के पास गए। खूब इलाज करवाया, लेकिन सब बेकार। हारकर वे एक ज्योतिषी के पास गए। ज्योतिषी बड़ा सयाना था । वह उस लड़की की चाल-ढाल, रंग-रुप और हरकतों को देखकर समझ गया कि मामला क्या है । फिर उसके बाएँ

हाथ की रेखाएँ देखकर बोला- "यह लड़की अपने पिछले जन्म के कर्मों का फल भोग रही है। इसके हाथ की रेखाएँ बता रही हैं कि पिछले जन्म में इसके काले उड़द दान किए थे और इसके पति ने सफेद मोती। इसी से इसे उड़दों - जैसा काला-कलूटा पति मिला और इसके पति को मोतियों जैसी गोरी-चिट्टी पत्नी।"

ज्योतिषी ने आगे समझाया - "बेटी, ऐसी हालत में तेरे लिए यही अच्छा है कि तू अपने पति के घर जा। पति परमेश्वर को सच्चे हृदय से अपना ले। तुझे जैसा पति मिला है उसी को अपना सब कुछ मान। इसी में सन्तोष कर इस जन्म में अच्छे-अच्छे कर्म और दान एवं पुण्य कर। अगले जन्म में अच्छा फल अवश्य मिलेगा।" ज्योतिषी की बात उसकी समझ में आ गई। अब वह लड़की अपने पति के साथ बड़े आनन्द से रहने लगी। यदि हम कष्टों में हैं तो ये हमारे पिछले बुरे कर्मों का फल है। यदि अगला जीवन संवारना है तो निरन्तर अच्छे कर्म करने होंगे। अपने जो ज्ञान प्राप्त किया है उसे दान कर दो। वह घटेगा नहीं, अपितु बढ़ेगा। मनीषियों का तो कहना है - **सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशेष्यते। हिरण्य गोर्महिवासः तिलकाञ्चन सर्पिषाम्॥** अर्थात् सोने, हीरे, गौ, धरती, वस्त्र, तिल आदि दानों में विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ है। यदि प्रभु ने आपको धन और सम्पत्ति दी है तो उसे यथाशक्ति गरीबों में बाँट दो। दूसरों को दुःखी देखकर आपका हृदय पिघल जाना चाहिए। अपने मित्रों की सहायता करो। जब दूसरों को आपके धन और समय की आवश्यकता हो तो उदारतापूर्वक दो, कुढ़ो मत, धन से, पुस्तकों से और अन्य वस्तुओं से अपने साथियों की सहायता करते रहो! यह मत सोचो कि हमारे पास देने को कुछ नहीं है। आपके पास देने के लिए कितना कुछ है। प्रेम का सागर, हँसी के फूल हैं और इन दोनों का कोई मूल्य नहीं लगता। तो भाई! सोचते क्या हो ? देना शुरु कर दो। तुम्हारी क्यारी के फूल दिन-प्रतिदिन झड़ रहे हैं, जीर्ण होकर झड़ रहे हैं। उन्हें बाँटते चलो! स्वयं खिलो और दूसरों को खिलाते चलो! ●

पता . डी.ए.वी. दल्लीराजहरा

सूचना

प्रदेस्थ समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आगामी २९ अगस्त २०१५ श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन) से लेकर जन्माष्टमी ५ सितंबर २०१५ पर्यन्त वेदप्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक बड़ी धूमधाम से मनाएँ।

धिग्धिग्गृहस्थाश्रमम्

क्रोशन्तः शिशवः सवारि सदनं पङ्कावृत्तं चाङ्गणं (माघ)
शय्यादंशवती च रूक्षमशनं धूमेन पूर्णं गृहम्।
भार्या निष्ठुरभाषिणी प्रभुरपि क्रोधेन पूर्णः सदा
स्नानं शीतलवारिणा हि सततं धिग्धिग्गृहस्थाश्रमम्॥

भावार्थ - गृहस्थाश्रम को जहाँ स्वर्ग माना गया है - वहाँ परिस्थितियों की क्रूरता के कारण महाकवि माघ ने उसका स्वरूप नर्क से भी बढ़कर दर्शाया है। जरा दृष्टिक्षेप कीजिए - बच्चे जहां, बिलख रहे हों, उनके संरक्षण की कोई उचित व्यवस्था न की जा सके, रहने का मकान जहाँ जल से परिपूरित हो, (गीला हो) कीचड़ से आंगन सन्नद्ध हो। शयन करने के बिस्तरे भी जहां खटमल एवं मच्छरों से भरे पड़े हो, आहार सदैव रूखा सूखा मिले (घृतादि व अच्छे पदार्थों के दर्शन तक न होवें) घर सदा धुएँ से परिपूर्ण रहे (धुआँ ही धुआँ सदा जिस घर में भरा रहे) पत्नी कठोर-निष्ठुर वचन बोलने वाली हो, स्वामी की जिस पर हमेशा कुदृष्टि रहे, (क्रोध ही क्रोध करे) और बारह महीने लगातार स्नान के लिए जल भी जिसे ठण्डा ही प्राप्त होवे इस प्रकार के गृहस्थाश्रम को धिक्कार है - धिक्कार है।

- सुभाषित सौरभ

वैचारिक

तीन पुस्तकों से क्रान्तिकारियों को मिली थी प्रेरणा.

- खुशहालचन्द्र आर्य

(१) गीता :- गीता श्रीकृष्ण भगवान ने महाभारत के युद्ध के समय जब कौरवों और पाण्डवों की सेना लड़ने के लिए आमने-सामने खड़ी थी। उसी समय अर्जुन ने अपने सामने दादा भीष्म, गुरु द्रौण, गुरु कृपाचार्य व अन्य सगे-सम्बन्धियों को लड़ने के लिए खड़ा देखा तो अर्जुन को मोह पैदा हो गया और कृष्ण से कहा हे ! केशव, मेरे सम्मुख लड़ने के लिए दादा भीष्म खड़े है, गुरु द्रौणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व अन्य सगे-सम्बन्धी खड़े हैं, जिनकी गोद में मैं पलकर बड़ा हुआ हूँ, वो आज मैं इनके ऊपर तीर कैसे चला सकता हूँ और निराशा से अर्जुन का शरीर इतना अधिक शक्तिहीन हो गया कि उसके हाथ से गाण्डीव धनुष्य भी गिरने लगा और वह मोह इतना अधिक ग्रसित हो गया और उसने कहा कि हे ! केशव, इन बुजुर्गों व सम्बन्धियों को मारकर मुझे राज्य गद्दी पाने की बजाय भीख मांगकर खाना भी अच्छा है। मैं अपनों के ऊपर बाण नहीं चलाऊंगा और गाण्डीव को दूर फेंक कर नैराश्य भाव से बैठ गया, तब श्रीकृषण ने अर्जुन को आत्मा की अमरता का सन्देश दिया साथ ही क्षत्रिय धर्म का पालन करना तुम्हारा प्रथम कर्त्तव्य है, समझाया जिससे अर्जुन का मोह टूटा और युद्ध करने के लिए तैयार हुआ। जो उपदेश श्रीकृष्ण ने अर्जुन को महाभारत युद्ध के समय दिया। उन्हीं उपदेशों की संग्रहित पुस्तक को "गीता" कहा जाता है।

गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने कर्त्तव्य का बोध करवाते हुए कहा कि हे ! पार्थ, तुम क्षत्रिय होकर यह कायरों जैसी बात क्यों करते हो। क्षत्रिय का धर्म है कि वह अन्याय करने वाले को तथा जो अन्याय का पक्ष लेता है, वह भी अन्यायी ही है, इसलिए अन्यायियों को मारना क्षत्रियों का धर्म होता है, इसलिए तुम अपने कर्त्तव्य से दूर मत भागो। दूसरी बात श्रीकृष्ण ने यह कही कि शरीर मरता है, आत्मा नहीं मरती। वह पहला शरीर मरने के बाद दूसरा शरीर धारण कर लेतीं है। जितने ये तुम्हारे सगे-सम्बन्धी है, जो अन्याय के पक्ष में खड़े हैं, ये सब अन्याय के कारण मर चुके हैं, तुम्हें तो इनको मार कर केवल श्रेय ही लेना है। सबसे बड़ी बात यह कही कि यदि तुम युद्ध नहीं करोगे तो तुम्हें अपयश मिलेगा। क्षत्रिय के लिए अपयश से जीना, मृत्यु से भी बुरा है। यदि तुम युद्ध करोगे ते जीत जाओगे तो तुम्हें धरती का राज्य करने को मिलेगा और यदि हार गये तो तुम्हें स्वर्ग मिलेगा यानि मोक्ष मिलेगा। जिसमें तुम मरने के बाद आनन्द से रहोगे। इस प्रकार तुमको दोनों हालात में लाभ ही लाभ है। आत्मा की अमरता की पुष्टि के लिए गीता में अनेकों श्लोक आये हैं, जिनमें मनुष्य जीवन को कैसे जीया जाये, यह शिक्षा भरी हुई है। इसके उपरान्त भी दो श्लोक ऐसे हैं जिनमें आत्मा की अमरता का सन्देश विशेषरुप से है। वे इसी भांति है -

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा,
न्यन्यानि संयाति नवनि देही ॥२२॥

अर्थ :- जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को धारण करता है।

नैनं किदन्ति पस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्तापो, न शोषयति मारुतः ॥२३ ॥

अर्थ :- इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती। इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकती ॥

इन श्लकों से ही हमारे देश के क्रान्तिकारी भाईयों ने आत्मा की अमरता को समझा औड़ जब मुख्य न्यायाधीश उनसे पूछता था कि तुम्हें फांसी देवें या आजीवन जेल। तब क्रान्तिकारी यही कहते थे कि हमें आप फांसी दे दीजिये

ताकि हम मरकर फिर भारत में ही जन्म लेवें और अठारह वर्ष बाद फिर हमें नौजवान होकर फिर देश की स्वतन्त्रता के लिए फांसी पर चढ़े । आजीवन जेल में रहकर अपने जीवन को बर्बाद नहीं करेंगे । यह था उनके **"गीता"** का जादू ।

(२) सत्यार्थ प्रकाश :- महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्त **"सत्यार्थ प्रकाश"** में देशभक्ति की अनेकों बातें लिखी हैं, जैसे भारत वह पारस का पत्थर है जिसके छूने मात्र से ही विदेशी लोग लोहा से सोना बन जाते थे, यानि विदेशी लोग भारत में आकर, शिक्षा प्राप्त करके शिक्षित व धनाढ्य बन जाते थे और अपने जीवन को सुखी बना लेते थे, दूसरा आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों पर राज्य करने थी तो व्यथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं, है जो कुछ है, सभी विदेशियों से पादाकान्त हो रहा है । सबसे बड़ी बात देशभक्ति की महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में यह लिखी है कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा हो यानि माता-पिता के समान कृपा, दया व न्याय रखने वाला भी क्यों न हो, वह भी स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता । इसी को पढ़कर लोकमान्य तिलक ने कहा था कि स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और क्रान्तिकारियों को भी महर्षि का यह सन्देश, उनमें देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए बलिदान देने की भावना को उत्साहित किया । देश को आजादी दिलवाने के लिए दस-बीस ही नहीं पर सैकड़ों आर्य समाजियों ने देश की बलिवेदी पर अपना पूरा जीवन समर्पित किया, जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द व लाला हरदयाल मुख्य हैं ।

(३) १८५७ का प्रथम स्वातन्त्रय समर :- १८५७ को स्वतन्त्रता संग्राम को अंग्रेजों ने सेना का विद्रोह की संज्ञा दे रखी थी, जिससे देशवासियों को कोई उत्साह नहीं मिलता था, बल्कि सेना के प्रति घृणा के भाव ही पैदा होते थे । परन्तु वीर सावरकर ने इंग्लैण्ड के **"इण्डिया हाऊस"** में बैठकर एक पुस्तक लिखी, जिसमें १८५७ के सेना-विद्रोह को देश का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम बताया । उसमें भाग लेने वाले महारानी लक्ष्मी, तात्या टोपे, नाना साहब, मंगल पाण्डे, राव तुलाराम आर्य आदि को पुस्तक पर छपने से पहले ही पाबन्दी लगा दी थी, परन्तु वीर सावरकर ने इसको फ्रान्स में छपवा कर भारत में क्रान्तिकारियों के पास भेज दी थी। क्रान्तिकारियों ने इस पुस्तक से बड़ी प्रेरणा ली । सरदार भगतसिंह ने इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित करवाया और सुभाषचन्द्र बोस ने भी इस ग्रन्थ का प्रकाशन करवाया । इस प्रकार से हम देखते हैं कि क्रान्तिकारियों ने इन तीन पुस्तकों से अपने जीवन को भारत माता की बलिवेदी पर आहूति देने में काफी प्रेरणा मिली ।

मुझे इस बात का बड़ा अफसोस है कि कांग्रेस ने अपने साठ साल के शासनकाल में हमारे देश के क्रान्तिकारियों को भुलाने की काफी चेष्टा की गई, जिससे हमारे देश के नवयुवक क्रान्तिकारियों के इतिहास से अनभिज्ञ रह गये । अब राष्ट्रीय भावना की सरकार आई है, आशा है कि अब उन वीर क्रान्तिकारियों को अवश्य ही सम्मान देगी ।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७०००০७

**कोई हिन्दू है,
कोई सिख है,
कोई ईसाई है,
कोई मुसलमान है,
रंग-बिरंगे गुलों का
ये गुलदान है ।
फूट के अबले
छोड़ दो दोस्तों,
राष्ट्र की एकता
देश की शान है ।।**

सामयिक

"निर्भया"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

पुलिस के सायरन से पार्क में भगदड़ मच गई। पुलिस की निर्भया टीम ने डंडे बरसाना शुरु कर दिये। सब इंस्पेक्टर लता कुमारी ने पुलिसिया गालियों की बौछारों और बैंत की मार से प्रेमी जोड़ों पर कहर बरसाना शुरु कर दिया। लातो-घूंसों में लम्बी-चौड़ी, कराटे में ब्लेक बेल्ट, अविवाहित ३० वर्षीय लता कुमारी चीख रही थी।

सब को धर लो। कोई बचकर भागने न पाये।

पुलिस ने सबको गाड़ी में जानवरों की तरह भरा और विजयी अभियान के साथ सायरन बजाती पुलिस की गाड़ी थाने की ओर फर्राटे से चल पड़ी।

लता कुमारी को प्रेम शब्द से ही नफरत थी। पुलिस में भर्ती होने के बाद किसी की हिम्मत भी नहीं थी कि वह प्रेम का इजहार कर सके और क्या देखकर करे ? सारे गुण तो पुरुषों वाले थे। प्रेमियों को चाहिए लम्बी जुल्फे, गोरी-गोरी बाहें, नजाकत, नफासत शर्मोहया। गोरी है कलाईयां। उनमें कंगन। अंगुली में अंगूठी, अंगूठी में नगीना। कालेज के दिनों में एक प्रेथी था उनका। जिसे उन्होंने अपना रंगरुट बनाकर रखा था। क्या करता बेचारा दुम दबाकर भाग निकला। खुद लताकुमारी ने प्रेम किया नहीं तो प्रेम करने वालों को कैसे बर्दास्त करती। प्रेम तो उन्हें समय और जीवन की बर्बादी लगती थी।

थाने में जब किसी को थर्ड डिग्री देनी होती तो लताकुमारी को ही बुलाया जाता। हाथों-लातों, गालियों से व्यक्ति टूट जाता। अन्य कोई फार्मूले की जरुरत ही न पड़ती। एक नजर में कोई कह भी नहीं सकता था कि लताकुमारी स्त्री है यो पुरुष। मर्दाना चाल-ढाल, बोलचाल।

थाने आते ही लताकुमारी ने आदेश दिया - "निकालों सालों को बाहर। लड़के के कपड़े उतारकर अन्डरवियर पर मुर्गा बना दो सबको।"

पुलिस के डंडे पड़ने शुरु हुए और सारे लड़कों ने कपड़े उतार दिये। लड़कों ने माफी मांगनी शुरु कर दी।

लताकुमारी फिर चीखी - "मुर्गा बनो सालो। बहुत आशिकी चढ़ी है। माँ-बाप पढ़ने-लिखने भेजते हैं और तुम करियर बनाने की उम्र में मजनू बने घूम रहे हो।"

लताकुमारी ने अपना बेंत चलाना शुरु किया। तो सारे लड़के मुर्गा बन गये। लड़कियों की तरफ देखकर उन्होंने गुस्से में कहा - "शर्म नहीं आती तुम लोगों को। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के चीथड़े उड़ाकर पार्क में ऐय्याशी करने में लगी हो। चलो सब लड़कियों घुटने के बल बैठ जओ।"

एक लड़की प्रिया ने इंकार करते हुए कहा - "मैडम हम कोई अपराधी नहीं है।" लताकुमारी को गुस्सा आ गया। उन्होंने लड़की की पीठ पर बेंत मारते हुए कहा - "शरीफों वाले काम भी नहीं है तुम्हारे", बेंत पड़ते ही लड़की तिलमिला गई। उसने क्रोध में कहा - "आपकी हिम्मत कैसे हुई मारने की। क्या प्रेम करना गुनाह है ?"

"लगता है बड़े बाप की छोरी है। इसलिए पुलिस से बहस कर रही है। देख छोरी। शासन के आदेश पर ही पुलिस ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए निर्भया टीम गठित की है।"

"और सुरक्षा की जगह आप हमें प्रताड़ित, अपमानित कर रही है।" प्रिया के चीखने पर लताकुमारी ने भी गुस्से में कहा - "तुम जैसी लड़कियों की वजह से ही महिलाओं पर अत्याचार होते हैं। ये प्यार-व्यार अपने घर पर करो।"

लताकुमारी को कौन समझाये कि प्यार करने वाले तो बगीचे, सिनेमा, रेस्टारेंट में ही मिलते है, छिप-छिप कर। कौन बताये उन्हें कि जवान लड़के-लड़कियों के पार्क, रेस्टारेन्ट सिनेमाघरों में मिलने से ही पार्कों में घूमने वालों की संख्या भी बढ़ गई है।

प्रिया ने कहा - "मैडम, आप पुलिसवाली होकर धार्मिक, सामाजिक, संगठनों, संस्कृति के ठेकेदारों की तरह

बात कर रही हैं। हम पार्क में कोई अभद्र हरकतें नहीं करते। मिलते है और प्यार के अलावा, पढ़ाई, कैरियर, भविष्य की योजनाओं पर भी विचार-विमर्श करते हैं।"

"खूब जानती हूँ तुम्हारे विचार-विमर्श" लता कुमारी ने व्यंग्य से कहा - "हमें सरकार के आदेश है। हम अपनी ड्यूटी कर रहे हैं।"

"सरकार ने आपको ये आदेश दिया है कि लोगों को प्रेम न करने दो।"

"ऐ..... छोरी, ज्यादा बहस मत कर मुझसे', लता कुमारी को गुस्सा आ गया।

"यही प्यार तुझे प्रेंग्नेंट कर देगा शादी से पहले। फिर प्रेमी शादी से इंकार कर देगो तो बलात्कार की रिपोर्ट लिखवाने आ जाओगी। अखबार में खबर छपेगी कि पुलिस की नाकामयाबी से महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं।"

"तमीज से बात करिये मैडम। हम पढ़े लिखे सभ्य घरों से हैं। आपको महिला सुरक्षा के लिए रखा गया है और लड़कियों से बात करने की तमीज नहीं है।" प्रिया ने गुस्से से कहा।

"हमें तमीज सिखाती है।"

लताकुमारी क्रोध में आगबगूला होकर बोली - "अपने रक्षकों से बहस करती है। बुलाऊँ तुम्हारे माँ-बाप को। बताऊँ उनको, क्या गुल खिला रही थी उनकी लाडली।"

"हाँ, हाँ, बुला लीजिये। मैने कोई गलत काम नहीं किया तो क्यों डरूँ ? वैसे भी दिन-दहाड़े सार्वजनिक स्थान पर कोई गलत काम कैसे कर सकता है। जिनकी आपको रक्षा करनी चाहिए। उन तक तो आप लोग पहुंच नहीं पाते। ड्यूटी के नाम पर हमें परेशान करते हैं।"

"देख छोरी, हम कोई भगवान नहीं है। इतने बड़े शहर में कहां क्या हो रहा है ? अगर कोई लड़की आधी रात को अपने प्रेमी के साथ सूनसान स्थानों पर घूमें और उनके साथ कोई हादसा हो जाये तो इसमें पुलिस की नहीं लड़की की गलती होती है।"

"मैडम, जिस वजह से पुलिस में निर्भया टीम का गठन करके आपको इंचार्ज बनाया गया है। उस निर्भया के साथ दुर्घटना सुनसान में शहर के बाहर नहीं। दिल्ली शहर में पूरे रास्ते में बस में हुई थी और उस वक्त आधी रात भी नहीं थी।"

"ठीक है लेकिन तुम लड़कियों को तरीके से रहना चाहिए। मर्दों की सोच वही सदियों पुरानी है आज भी। तुम्हें किसी लड़के के साथ घूमते-फिरते प्रेम करते देखेंगे तो तुम्हें चरित्रहीन चालू टाइप लड़की समझकर तुम्हारे साथ जोर-जबरदस्ती करने के लिए मौके की फिराक में रहेंगे।"

"तो क्या हम लड़कियाँ वहशी मर्दों के डर से प्यार करना छोड़ दे। जीना छोड़ दें। हंसना-बोलना छोड़ दें।"

"हमारा काम अपराध को रोकना है। हम शुरु में ही पकड़-धकड़ करके डांट-डपटकर डर पैदा कर दे तो आगे की घटनाओं से बचा जा सकता है। ऐसा मेरा सोचना है।"

बात करते-करते दोनों का गुस्सा उतर चुका था। अब दोनों सामान्य स्थिति में सवाल-जवाब कर रही थी।

"लेकिन मैडम आपकी सोच भी तो पुरुषवादी है।" प्रिया ने कहा।

"तू मेरी बेटी होती। तब भी मैं तुझे ये सब करने से मना करती", लताकुमारी ने कहा।

"मैडम, आप सुनसान सड़कों पर वीरान स्थानों पर जाकर उन मासूमों को तलाशिये। जिन्हें सच में आपकी जरुरत है। जो कहीं हैवानियत का शिकार हो रही है। जो आपसे मदद के लिए चीख रही थी। तभी निर्भया टीम का होना सार्थक है।"

"मैं जानती हूँ। निर्भया उन्हीं अबलाओं की मदद के लिए आरम्भ की गई है। लेकिन सरकार में बैठे नेताओं को लगता है कि ....

तभी एक सिपाही ने आकर कहा मैडम क्या करना है इन लड़के-लड़कियों का

"डांट-डपटकर। समझा बुझाकर छोड़ दो", लताकुमारी ने सहज भाव से कहा।

"क्या नाम है तुम्हारा"

"प्रिया"

"हमें कई बारप कड़क बनना पड़ता है । तुम्हें शायद बुरा लगा । सॉरी"

"नहीं मैडम, आपकी नौकरी ही ऐसी है ।"

"ओके प्रिया, अब तुम जा सकती हो ।"

"मैडम, आपको एक बात कहूँ"

"हाँ, कहो"

"आप प्रेम में डूबे लोगों को नहीं । बल्कि पुरुषों से सताई पीड़ित लड़कियों के साथ जोर-जबरदस्ती करने उन्हें सताने वालों पर कार्यवाही करेगी ताकि निर्भया का उद्देश्य सफल हो सकेगा ।"

लताकुमारी ने गंभीर मुद्रा में कहा -"तुम ठीक कहती हो । मैं कोशिश करूंगी ।"

अब इसे इत्तफाक कहें या दुर्भाग्य । दूसरे दिन अखबार में बड़े अक्षरों में खबर थी । पुलिस ने रंगे हाथों पार्क में लड़के-लड़कियों को गिरफ्तार किया । फिर समझाइश देकर छोड़ दिया । प्रिया की फोटो अखबार के क्षेत्रीय संस्करण में खबर के साथ छपी थी । छोटे से शहर में हंगामा हो गया। सारे शहर में प्रिया सनसनी बन गई । जितने मुंह उतनी बातें। प्रिया की माँ का रो-रोकर बुरा हाल था ।

"अब क्या होगा ? कैसे लड़खी की शादी होगी। सारे शहर में हमारा तमाशा बन गया । अरे इस उम्र में लड़के लड़ाई-झगड़ा करके थाने जाये ये तो सुना था । लेकिन १२वीं क्लास की १८ साल की लड़की को पुलिस लड़कों के साथ गिरफ्तार करके ले जाये । काश मैं ये सब देखने-सुनने से पहले मर गई होती । प्रिया सब कुछ सुनती रही । उसे क्या पतआ था ? उसकी फोटो खबर सहित अखबार में छप जायेगी । तकलीफ तो उसे भी हो रही थी । किस-किसको क्या-क्या जवाब देगी । सब उसका मजाक उड़ायेंगे। पिता जल्दी में बिना अखबार पढ़े दफ्तर चले गये । लेकिन दफ्तर में जब उनसे लोगों ने मजाक में, व्यंग्य में प्रिया के विषय में उल्टी-सीधी बातें कहकर उन्हें अखबार दिखाया तो क्रोध में वे तांडव करते शंकर हो गये । घर आकर उन्होंने जो लताड़ना शुरु किया अपनी बेटी को । प्रिया को लगा उसने कभी भरपाई न होने वाला पाप कर दिया हो । पिता क्रोध में चीख रहे थे ।

"तुम्हें पढ़ने भेजा । तुम पर विश्वास किया और तुमने ये सिला दिया । तुम्हारी जैसी लड़कियों के कारण माँ-बाप पैदा होते ही बेटियों का गला घोंट देते हैं । तुम कलंक हो हमारे लिए । तुमने खानदान की इज्जत पर ग्रहण लगा दिया । अब तुम्हारे किये की सजा पूरे परिवार को भुगतनी पड़ेगी । जरा भी शर्म बाकी हो तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो । तुम्हारी वजह से कितना अपमान सहना पड़ा मुझे दफ्तर में । मोहल्ले-पड़ोस, रिश्तेदारी में तमाशा बनाकर रख दिया हमारा । तुम्हारी शादी तो होने से रही । तुम्हारे कारण तुम्हारी छोटी बहिन की भी शादी नहीं हो पायेगी । मेरे लिए मर चुकी हो तुम ।"

"लेकिन पापा ......"

"चटाक............. प्रिया के गालों पर थप्पड़ जड़ दिये पिता ने और चीखे " - दूर हो जा मेरी नजरों से। माँ की लानते, पिता की हृदय में चुभने वाली फटकार से प्रिया ने घर में रखी कीटनाशक दवा पी ली । प्रिया अस्पताल में भर्ती थी । माँ रो रही थी । पिता स्वयं को कोस रहे थे। इंस्पेक्टर लताकुमारी महिला सुरक्षा निर्भया टीम की सर्वेसर्वा अपने पुलिस दल के साथ अस्पताल पहुंची । होश आते ही प्रिया ने अखबार में छपी फोटो और खबर से त्रस्त होकर आत्महत्या करने का कारण बताया ।

"किसने छापी खबर और फोटो । जरा बुलाओ अखबार वालो को" लताकुमारी ने पुलिस दल को आदेश दिया ।

"अभी और यहीं अस्पताल में " दो सिपाही अखबार के दफ्तर की ओर चल दिये ।

"देखिये, अंकल जी" लताकुमारी ने प्रिया के पिता को समझाते हुए कहा-" मैं लाई थी इसे पकड़कर । लेकिन आपकी लड़की कुछ गलत नहीं कर रही थी । अपने स्कूल के सहपाठियों के साथ बैठक पढ़ाई-लिखाई के विषय में डिस्कस कर रही थी और पार्क में बैठकर कोई गलत काम तो कर नहीं सकता सार्वजनिक स्थान पर । वो हमारी गलती थी कि हम पकड़ लाये । आपने इतना डांट-फटकार दिया। क्या आपको अपनी लड़की से ज्यादा अखबार वालों पर भरोसा है । कोएजुकेशन में पढ़ती है । क्या कोई लड़का

उसका दोस्त नहीं हो सकता। क्या दोस्ती करना, प्रेम करना गुनाह है आपकी नज़रों में।"

आँखों से बहते आंसुओं को रोकते हुए पिता ने कहा - "मैडम वो लड़का तो हमारे घर भी आता था। हमें कोई एतराज नहीं लेकिन अखबार में छपी खबर और फोटो से मैं विचरित हो गया था।"

तभी पुलिसवाले खबर छापने वाले पत्रकार को पकड़कर ले आये। लताकुमारी ने गुस्से में कहा - " दिमाग है कि नहीं। क्या छापना चाहिए क्या नहीं ? इतनी भी समझ नहीं। ऐसी खबर का क्या अर्थ ? कि एक लड़की को आतम हत्या करने के लिए मजबूर होना पड़े। तुम्हारी खबर जरुरी है या लड़की की जिन्दगी। बनाऊँ तुम पर आत्महत्या के लिए मजबूर करने का केस। करूँ अन्दर"

"मैडम, मुझसे भूल हो गई" पत्रकार ने क्षमा भरे स्वर में कहा।

"तो भूल सुधार करो। कल के अखबार में फिर बड़े अक्षरों में छापों कि जिस लड़की की आपने फोटो छापी थी। वो गलती से छप गई थी और पुलिस की गलती भी छापो कि पुलिस की गलती की सजा निर्दोष स्कूली छात्रा प्रिया को भुगतनी पड़ी। पुलिस और अखबार दोनों की ओर से प्रिया से क्षमा की अपील।"

"जी मैडम। हो जायेगा।" पत्रकार ने कहा।

दूसरे दिन अखबार में छपी गलती और माफी की खबर से सबके दिमाग में बैठा कचरा साफ हो गया।

प्रिया के पिता ने अपनी बेटी से कहा - "बेटी, मुझे भी माफ कर दो", प्रिया अपने पापा से लिपट गई।

लताकुमारी ने प्रिया के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा - "क्यों प्रिया अब तो सफल रही न निर्भया टीम की सार्थकता।"

"जी मैडम, आज सचमुच आपने एक निर्भया को बचाकर उसका खोया सम्मान वापिस दिलाकर उसे मरने से बचा लिया।"

लता कुमारी ने प्रिया के दोनों गालों को अपनी हथेली में लेते हुए कहा - "जानती हो प्रिया। जिस निर्भया के कारण महिलाओं की सुरक्षा के लिए इतने कानून बनें। उस निर्भया ने मृत्युतुल्य भीषण दुर्घटना के बाद भी यही कहा था कि मैं जीना चाहती हूँ। मैं तुमसे एक वचन मांगती हूं चाहे कुछ भी हो जाये। घटना छोटी हो या बड़ी। तुम आतम हत्या जैसा कदम कभी नहीं उठाओगी।"

लताकुमारी के सीने से लग गई प्रिया।

"मैं वादा करती हूँ दीदी।"

दूर आसमान में बैठी निर्भया के चेहरे पर मुस्कुराहट तैर गई। जैसे कह रही हो आज मेरी मृत्यु सार्थक हो गई।

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

—: कविता :—

आंखो का मर गया है पानी

गान महानता के गाकर, कर्म नीच करने की ठानी।
मानवता की बात करो मत, आँखो का मर गया है पानी।
शिक्षा की बातें करके हम,
छात्रों की कुछ तथ्य रटाते।
मुफ्त का माल उड़ाते हैं हम,
गान महानता के नित गाते।
बलात्कारी ही पनपेंगे यहां, संस्कृति हुई रवानी।
मानवता की बात करो मत, आँखों का मर गया है पानी।
जनतंत्र के गाने गाकर,
भ्रष्ट तंत्र को हैं पनपाते।
देवी की पूजा करते झूठी,
गर्भ में उनको हैं मरवाते।
नारी भी संस्कृति को तज, कहती है वह हुई सवानी।
मानवता की बात करो मत, आँखों का मर गया है पानी।
आडम्बर को धर्म बनाकर,
ऊँची-ऊँची दुकान सजाकर।
राष्ट्रप्रेमी संपत्ति हड़पें,
राष्ट्रप्रेम के गाने गाकर।
ज्ञान से भिन्न करें आचरण, मिलते हैं अब कोरे ज्ञानी।
मानवता की बात करो मत, आँखों का मर गया है पानी।

रचयिता : डॉ. सन्तोष गौड़, जींद हरियाणा

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से कोलेस्ट्रॉल का उपचार

– डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

शरीर में पाई जाने वाली कोलेस्ट्रॉल एक प्रकार की चर्बी होती है, जो शरीर में कई प्रकार की क्रियाकलापों को कराने जैसे नई कोशिकाओं के निर्माण, इंसुलिन तथा हारमोन्स उत्पादन करने में आवश्यक है। कोलेस्ट्राल दो तरह के होते हैं :- (१) एलडीएल (खराब कोलेस्ट्राल) - खराब कोलेस्ट्राल से हृदय रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। (२) एचडीएल (अच्छा कोलेस्ट्राल) - अच्छे कोलेस्ट्राल से खतरा बहुत कम अर्थात् शून्य के बराबर होता है।

कोलेस्ट्राल से धमनी की दीवारों में जलन युक्त रोग पैदा हो जाते हैं, जिसे अर्थरोस्क्लोरोसिस कहते हैं। इस रोग के कारण से धमनी की दीवारों में चर्बी जाम हो जाती है और रक्त संचालन में रुकावट पैदा हो जाती है और इसके कारण से दिल का दौरा भी पड़ने लगता है। शरीर में कोलेस्ट्राल का सामान्य स्तर लगभग १ ग्राम का चौथा भाग होना चाहिए।

कारण :- यह रोग अनुवांशिकता के कारण से भी हो सकता है, अर्थात् यदि किसी व्यक्ति के परिवार में अनुवांशिक रोग मोटापा किसी को है तो उस परिवार में किसी भी व्यक्ति को यह रोग अधिक होने का खतरा रहता है। गतिहीन जीवन बिताने से भी यह रोग अधिक होता है जैसे चलने-फिरने का कार्य न करना, व्यायाम न करना। मधुमेह रोग या मानसिक दबाव के कारण से भी यह रोग हो सकता है। स्टराइड का दुष्प्रयोग के कारण से कोलेस्ट्राल रोग हो सकता है। यकृत रोग तथा थायराइड से संबंधित रोग होने के कारण से यह रोग हो सकता है।

लक्षण :- इस रोग से पीड़ित रोगी के छाती में दर्द होता है, मोटापा बढ़ जाता है, मधुमेह का रोग भी हो जाता है, रोगी के रक्त में कोलेस्ट्राल की मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाती है व यदि इस रोग से धमनियां प्रभावित हो गई हो तो नपुंसकता रोग हो जाता है। रोगी के मांसपेशियों में दर्द होता है। वैसे रक्त में कोलेस्ट्राल की मात्रा बढ़ जाने से कारण से कोई विशेष प्रकार के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते। इस रोग के कारण से कुछ गंभीर अवस्थाएं भी पैदा हो सकती है, जैसे हत्शूल, उच्चरक्तचाप, हृदयरोग या आघात होना आदि।

कोलेस्ट्राल रोग होने पर क्या करें या क्या न करें :-

सबसे पहले इस रोग से पीड़ित रोगी को वह भोजन बिल्कुल भी सेवन नहीं करना चाहिए जिसमें कोलेस्ट्राल की मात्रा अधिक हो। रोगी को हाइड्रोजनकृत चर्बी जैसे - घी, मक्खन, वनस्पति, नारियल का तेज, नकली मक्खन या ताड़ का तेल आदि का उपयोग भोजन में नहीं करना चाहिए। इन तेलों की जगह रोगी को सोयाबीन तेल, सूर्यमूखी तेल या कुसुम कराड़ी तेल का उपयोग करना चाहिए। पापकार्न, मंजोला या सफोला तेल का भी उपयोग भोजन बनाने में कर सकते हैं। अधिक चर्बी उत्पन्न करने वाले भोजन जैसे कचौड़ी, समोसे या केक आदि का सेवन न करें। क्रीम, पनीर या दूध से बने दही या अन्य मिठाईयां जो गाढ़े दूध से बनी हो जैसे - गुलाब जामुन, मावा, चाकलेट तथा रसगुल्ले आदि चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि दूध का उपयोग करना भी हो तो मलाई हटे दूध का प्रयोग करें। मलाई हटे दूध से बनी पनीर का उपयोग भी कर सकते हैं। इस रोग से पीड़ित रोगी को किसी भी प्रकार के मांस का सेवन नहीं करना चाहिए। रोगी को कड़े छिलके वाले फल नहीं खाना चाहिए।

होमियो औषधियां :- नक्स, चाइना, कर्बोवेज, पल्साटिला आदि औषधियां चिकित्सक की सलाह से ली जा सकती है। कई रोगी ठीक हो गये हैं, कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध, रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

बालगंगाधर तिलक एवं चन्द्रशेखर आजाद जयंती पर संगोष्ठी सम्पन्न

रायपुर । आशीर्वाद भवन बैरनबाजार रायपुर में दिनांक २३-७-२०१५ को लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन सायंकाल ६.३० बजे से रात्रि ९.०० बजे तक कान्य कुब्ज सभा हाल में आयोजित किया गया, जिसमें आर्यसमाज को भी आमंत्रित किया गया था ।

पांच स्वनाम धन्य वक्ताओं में आर्यसमाज की ओर से आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान की सहभागिता रही । श्री गिरीश पंकज द्वारा यह बताया गया कि बालगंगाधर तिलक के नाम के सामने लोकमान्य शब्द लगाया गया, जिसके वे सर्वथा योग्य थे । पत्रकारिता के क्षेत्र में बालगंगाधर तिलक की महती भूमिका रही । स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वयोवृद्ध श्री महादेव प्रसाद पाण्डेय ने कविता एवं शायरी के माध्यम से बालगंगाधर तिलक एवं चन्द्रशेखर आजाद के जीवनी पर प्रकाश डाला । आचार्य अंशुदेव आर्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वराज्य शब्द का उपयोग अपने क्रान्तिकारी कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में सन् १८७५ में किया गया । उसी से प्रेरणा प्राप्त कर बालगंगाधर तिलक जी ने यह कहा- "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, इसे मैं लेकर रहूंगा ।" स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की महती भूमिका रही है । आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त कर कई स्वातन्त्र्य वीर शहीद हो गये, जिसमें अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद एक चमकते हुए सितारा जैसे है, जिसने १४ वर्ष के आयु में जब अंग्रेज दण्डाधिकारी अफसर द्वारा पूछा गया कि तुम्हारा क्या नाम है ? तब इसके उत्तर में कहा गया कि मेरा नाम "आजाद" है । पुनः पूछा गया कि तुम्हारी माता जी का क्या नाम है? तब उन्होंने कहा कि मेरी माता जी का नाम "स्वतन्त्रता" है । सभा भवन में लगभग ४०० श्रोताओं की उपस्थिति थी और बहुत शानदार ढंग से जयंती पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई । सभा की ओर से प्रधान एवं मंत्री, आर्यसमाज राजेन्द्रनगर कटोरातालाब के प्रधान श्री दयालदास आहूजा एवं मंत्री श्री तापेश्वर कुमार शर्मा, आर्यसमाज बैजनाथपारा से विकास अंजनकर उपस्थित रहे । ***संवाददाता : सभा मंत्री***

श्रद्धांञ्जलि

भिलाई । आर्यसमाज कोहका के मंत्री श्री रामनिवास गुप्ता के सुपुत्र श्री अशोक कुमार गुप्ता का लगभग ३६ वर्ष की अल्पायु में देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। वे पिछले कुछ दिनों से गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। आप सपरिवार आर्यसमाज के निष्ठावान समर्पित कार्यकर्त्ता एवं पतञ्जलि योग समिति में योग शिक्षक के रुप में जुड़े हुये थे । वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये । दिवंगत आत्मा को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि। ***- निज संवाददाता***

श्रद्धांञ्जलि

दुर्ग । आर्यसमाज आर्यनगर के सदस्य श्री नवीन सिंह ठाकुर की पूज्या माताजी श्रीमती गणेशिया बाई ठाकुर का देहावसान दिनांक २८-७-२०१५ को हो गया । वे कुछ दिनों से अस्वस्थ थीं । उनकी माता जी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई । उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ । दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।
- निज संवाददाता

आर्यसमाज सेक्टर-६ की नई कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न

भिलाई । आर्यसमाज सेक्टर-६ में दिनांक ५ जुलाई २०१५ को आयोजित साधारण सभा में नई कार्यकारिणी का गठन श्री खेलेन्द्र मोहन गिरधर के नेतृत्व में किया गया। यह बड़े हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज ने अपनी परम्परा के अनुसार सभी पदाधिकारी सर्वसम्मति के आधार पर निर्वाचित हुए ।

तदनुसार श्री जितेन्द्र प्रकाश सल्होत्रा प्रधान, श्री रवि आर्य मंत्री तथा श्री रविन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके अलावा श्री सुदर्शन बहल एवं श्री जवाहर लाल सरपाल उपप्रधान, श्री अरुण ग्रोवर एवं श्रीमती प्रमिला सरपाल उपमंत्री, श्री मोहनलाल पुस्तकाध्यक्ष, श्री राजकुमार शास्त्री वेद प्रचार अधिष्ठाता, श्री राजकुमार भल्ला आर्यवीर दल अधिष्ठाता और श्रीमती मधु गुप्ता आंतरिक लेखा परीक्षक निर्वाचित हुई ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधान श्री अवनीभूषण पुरंग ने सभी सदस्यों का आभार प्रकट किया। मंत्री श्री रवि आर्य ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और कोषाध्यक्ष श्री रविन्द्र गुप्ता ने वित्त वर्ष २०१४-१५ का आय-व्यय विवरण तथा सत्र २०१५-१६ का बजट प्रस्तुत किया । महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन सचिव श्रीमती प्रमिला सरपाल तथा सत्र २०१४-१५ का आय-व्य विवरण श्री प्रवीण गुप्ता ने प्रस्तुत किया । शांतिपाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई ।

संवाददाता : रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज से.-६ भिलाई

माँ सत्यप्रियायति एवं महात्मा चैतन्यमुनि जी सम्मानित

सोलन (हि.प्र.) । विगत दिनों हिमाचल प्रदेश सोलन में डी.ए.वी. प्रबंधन समिति द्वारा आयोजित भव्य समारोह में अन्य विद्वानों के साथ-साथ माँ सत्यप्रियायति जी एवं महात्मा चैतन्यमुनि जी को भी सम्मानित किया गया। यह सम्मेलन पूज्य महात्मा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा मुख्य अतिथि समिति के अध्यक्ष श्री पूनमसूरिजी थे । देश भर से आए हजारों डी.ए.वी. संस्थान से जुड़े व्यक्तियों ने समारोह को सार्थकता एवं भव्यता प्रदान की । उल्लेखनीय है कि पूज्य माताजी तथा महात्मा जी ने सन् १९९६-९७ से लेकर आज तक डी.ए.वी. के कालेजों तथा स्कूलों में सैकड़ों ही सार्थक चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना शिविर संचालित किए हैं, जिनमें से बनीखेत, अमृतसर, जालन्धर, बटाला, नकोदर, फिरोजपुर, जलालाबाद, मोहन आश्रम हरिद्वार, पंचकूला तथा अबोहर आदि कालेजों में लगाए गए शिविर विशेष उल्लेखनीय है । इन आवासीय शिविरों में पूज्य माता जी व महात्माजी जिस मनोवैज्ञानिक व तार्किक ढंग से अत्यधिक परिश्रम करके सार्वभौमिक वैदिक विचारधारा की चेतना शिविरार्थियों में स्थापित करते थे, उसका स्मरण करके आज भी डी.ए.वी. के शिविरार्थियों, आयोजक एवं अधिकारी अत्यधिक प्रफुल्लित होते हैं ।

संवाददाता : प्रबंधक वैदिक वशिष्ठ आश्रम

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

विगत २६-६-२०१५ को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संस्कृतार्य सभा के संयोजक एवं संस्कृत वेद विद्वान् पं. काशीनाथ चतुर्वेजी जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमलाकान्ती चतुर्वेदी का स्वल्प बीमारी के पश्चात् दिल्ली के चिकित्सालय में हृदयघात से देहावसान हो गया । उसी दिन प्रयागराज में पूर्ण वैदिक विधि विधान से अन्तिम संस्कार भी सम्पन्न हो गया । परिवार के लिए यह अपूरणीय क्षति है । माताजी धर्मपारायण एवं सेवाभावी थी, उनका अप्रत्याशित प्रयाण वेदनादायक है । इस दुख की घड़ी में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है ।

-सम्पादक

संस्कृत संगीत संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह सोल्लास सम्पन्न

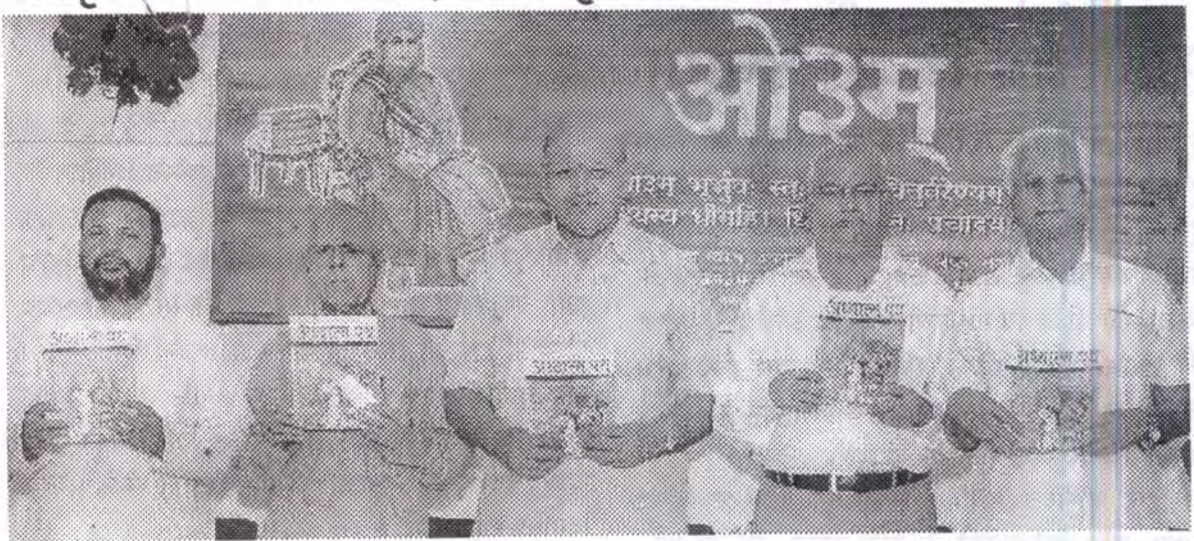

नई दिल्ली । अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज बी-२ जनकपुरी में विश्वशांति महायज्ञ, संस्कृत संगीत भजन संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरुण सहारन ने की तथा इसके विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डॉ. रमाकान्त शुक्ल एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार थे । समारोह का आयोजन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के सान्निध्य में हुआ । इस अवसर पर अध्यात्म पथ पत्रिका एवं 'ज्ञान गंगा' का लोकार्पण खचाखच भरे सभागार में विद्वतजनों की उपस्थिति में हुआ ।

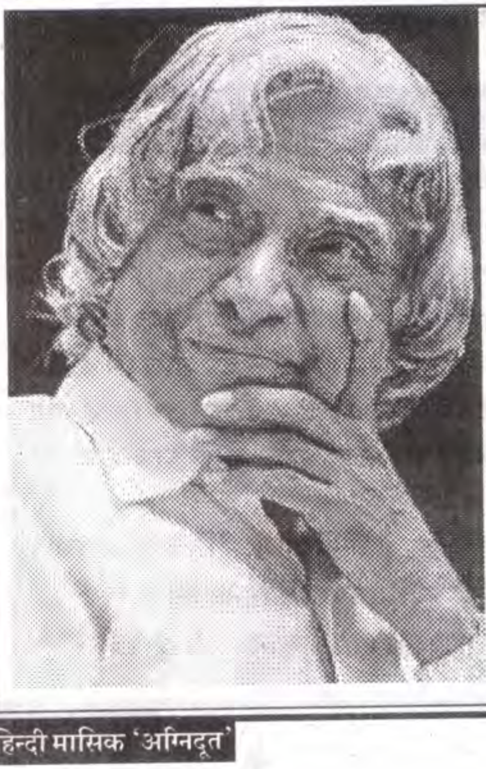

माँ भारती के सपूत पूर्व राष्ट्रपति "मिसाईल मेन" डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम कल तक दिलों में थे, आज यादों में बस गए, यानी अमर हो गए। सोमवार शाम करीब ६.३० बजे आईआईएम शिलाँन्ग में लेक्चर दे रहे थे कि दिल ने धड़कना बंद कर दिया, बेहोश होकर गिर पड़े । तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन शाम ७.४५ बजे वे इस दुनिया से चले गए। वे सरल, सहज, युवाओं के कौशल उन्नयन के लिए सेवा देने तत्पर रहते थे, जिन्हें सारा देश में "मिसाईल मेन" के रुप में पहचाना जाता था । ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी, सदस्यगण एवं अग्निदूत परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव दिवस मनाया

धमतरी । दिनांक २१ जून २०१५ को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव के दिन अग्निदेव आर्य प्राथमिक एवं डी.ए.वी. कन्या माध्य. विद्यालय धमतरी के संयुक्त तत्वावधान में प्रातः ७.०० बजे भारत स्वाभिमान मंच के जिलाध्यक्ष श्री अजय गोस्वामी अग्निदेव आर्य प्राथ. शाला की प्रधान पाठिका श्रीमति सीमा शिन्दे द्वारा योग प्रारंभ किया गया । योग के सारे आसन व प्राणायाम को अजय गोस्वामी एवं कृष्णा सोनी ने कराया ।

अग्निदेव प्राथमिक शाला एवं डी.ए.वी. कन्या माध्य. शाला की समिति के सभी सदस्य, समस्त छात्र-छात्रायें, पालकगण, नागरिकगण ने शाला में उपस्थित होकर योग का लाभ उठाया । शाला की समस्त शिक्षिकायें, प्रधान पाठिका श्रीमती मंदा बाबर, कृष्णा सोनी, रमा तिवारी, अन्नपूर्णा नेताम, सीमा शिन्दे, कु. डिम्पल साहू, भूलक्ष्मी साहू, लक्ष्मी ध्रुव, फूलचंद ध्रुव उपस्थित थे ।

संवाददाता : प्रधान पाठिका, डी.ए.वी. कन्या माध्य. विद्यालय, धमतरी

शाला में प्रवेशोत्सव मनाया गया

धमतरी । अग्निदेव आर्य प्राथमिक कन्या शाला एवं डी.ए.वी. माध्यमिक शाला धमतरी में दिनांक १८-६-२०१५ को प्रातः ९.३० बजे शाला प्रबंध समिति एवं शाला विकास समिति के पदाधिकारियों एवं समस्त शिक्षिकाओं की उपस्थिति में शाला प्रवेश उत्सव का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम की शुरुआत गायत्री मंत्र से किया गया, तत्पश्चात् शाला विकास समिति के सचिव श्री अजय गोस्वामी द्वारा माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना किया गया । तत्पश्चात् शाला के सचिव एवं प्रधान पाठिका श्रीमती मंदा बाबर द्वारा नवप्रवेशी छात्र-छात्राओं को तिलक वंदन किया गया । बालक-बालिकाओं का मुंह मीठाकर पाठ्य पुस्तक वितरित किया गया ।

इस अवसर श्री अजय गोस्वामी जी ने कहा कि विद्या दान श्रेष्ठ दान है । जो कभी न चुराए जाने वाला धन है, ज्ञान जितना बांटा जाए उतना ही बढ़ता है, बच्चों को संस्कारवान शिक्षक ही बनाते हैं । अध्यक्ष एवं प्रधान पाठिका द्वारा बच्चों को नियमित शाला आने, पढ़ाई लगन से करने एवं स्वच्छता पर ध्यान देने हेतु मार्गदर्शन दिया ।

संवाददाता : प्रधान पाठिका, डी.ए.वी. कन्या माध्य. विद्यालय, धमतरी

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पंत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे । जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें । अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा ।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें । **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं ।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं । **– दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

आर्यसमाज मंदिर कबीरधाम में सम्पन्न भूमि पूजन कार्यक्रम की झलकियाँ

गोलोकधाम गौशाला, हाथीगढ़ (गवौद) बागबाहरा में सम्पन्न कामधेनु महायज्ञ एवं गौशाला उद्घाटन अवसर पर उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण

अगस्त 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान ...6
-15
...110001

त्रैवार्षिक साधारण सभा बैठक एवं सभा का निर्वाचन

–: सूचना :–

सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 27-7-2015 में लिये गये निर्णयानुसार सभा का त्रैवार्षिक साधारण सभा बैठक एवं सभा का निर्वाचन दिनांक 27 सितंबर 2015 (रविवार) को रायगढ़ में आयोजित किया जायेगा। महाधिवेशन की विधिवत सूचना अलग से यथासमय प्रेषित की जायेगी।

अतः सभी मान्य प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे त्रैवार्षिक साधारण सभा बैठक में, निर्धारित स्थान व समय पर उपस्थित होने की कृपा करेंगे।

मंत्री
दीनानाथ वर्मा

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य एवं अग्निदूत परिवार की ओर से

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.